सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sanchamet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 12/-
वार्षिक	रु0 120/-
विशेष वार्षिक	रु0 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यू.एस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

दिसम्बर, 2010 वर्ष 09 अंक 10

शुहदा-ए-इस्लाम

हज़रते हमजा उहुद में वो शहीद हुए
हज़रते उमर हरमे मदनी में शहीद हुए
हज़रते उस्मान मदीनतुन्नबी में शहीद हुए
हज़रते अली कूफ़े में वो शहीद हुए
हज़रते हुसैन करबला में शहीद हुए
इब्नि जुबैर हरमे मक्की में शहीद हुए
दिल से तमाम शुहदा पे सलाम पढ़ते हैं
दिल में हम शुहदा का पयाम रखते हैं

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Visoin Comput+er- +91 94510 64588, +91 90260 43858

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
शुऊर की दीक्षा	हज़रत मौलाना अलीमियां नदवी रह0	5
शहादते हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हु	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	6
जग नायक	मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	9
हममें सुधार कैसे हो?	मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	11
मुस्लिम समाज	मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	15
आप के प्रश्नों के उत्तर	इदारा	17
हम कैसे पढ़ायें	डा0 सलामतुल्लाह	20
त्याग की भावना	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	22
इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से?	अल्लामा सै0 सुलेमान नदवी	23
बीच का रास्ता अपनायें सुन्नतों पर चलें	मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	25
ख़वातीने इस्लाम	मौ0 अब्दुर्रहमान नग्रामी नदवी	29
परिश्रम और धैर्य	डॉ0 सै0 मुहीउद्दीन कादिरी "ज़ोर"	32
शहीदों को सलाम		32
स्वयं लिखित जीवनी हबीबुल्ला आज़मी		33
बिदअ़त	मौलाना सैफुल्लाह रहमानी	36
कुर्आन की रौशनी में इंसानी हुकूक़		39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

– मौ0 शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर–ए–बकरह, आयत 34 से 36

अनुवाद : और जब हमने हुक्म दिया फरिश्तों को कि सज्दा करो आदम को तो सब सज्दे में गिर पड़े मगर शैतान[1] उसने न माना और तकब्बुर किया और था वह काफिरो में से[2](34) और हमने कहा आदम से कि रहा कर तू और तेरी औरत जन्नत में और खाओ उसमें से जो चाहो जहाँ कही से और पास मत जाना उस दरख्त के फिर तुम हो जाओगे जालिमो में से[3](35) फिर हिला दिया उनको शैतान ने उस जगह से फिर निकाला उनको उस इज्जत व राहत से कि जिस में थे[4], और हमने कहा तुम सब उसमे एक दूसरे के दुश्मन होगे[5], और तुम्हारे वास्ते ज़मीन में ठिकाना है[6] और एक वक्त तक ठहरना(36)।

तफसीर

1. जब हज़रत आदम अ0 का खलीफा होना मुसल्लम हो चुका तो फरिश्तों को और उनके साथ जिन्नात को हुक्म हुआ कि हज़रत आदम अ0 की तरफ सज्दा करें और उनको सज्दों का किब्ला बनाएं। जैसा बादशाह लोग अपना वली अहद मुकर्रर करते हैं कि अरकाने दौलत (हुकूमत के अहम लोगो) को नज़रे पेश करने का हुक्म करते हैं ताकि किसी के सरताबी की गुजाइंश न हो चुनाँचि सब ने सज्दा अदा किया सिवाए इब्लीस के वह अस्ल से जिन्नात में से था और फरिश्तों के साथ रहता था और सबब इस सरकशी का यह हुआ कि जिन्नात चन्द हजार साल से ज़मीन में मुतफर्रिक थे और आसमान पर भी जाते थे। जब उनका फसाद और खूँरेजी बढ़ी तो फरिश्तो ने अल्लाह के हुक्म से बाज को कत्ल किया और बाज को जंगल पहाड़ और जजाइर में मुंतशिर कर दिया। इब्लीस उनमें बड़ा आलिम व आबिद था। उसने जिन्नात के फसाद से अपनी बेलौसी जाहिर की। फरिश्तो की सिफारिश से यह बच गया और फरिश्तों ही में रहने लगा और इस लालच में कि तमाम जिन्नात की जगह अब सिर्फ मैं ज़मीन में मतसर्रिफ (इख्तियार वाला) बनाया जाऊँ इस लिये इबादत में बहुत कोशिश करता रहा और ज़मीन की खिलाफत का खयाल पकाता रहा। जब हुक्म इलाही से हज़रत आदम अ0 की खिलाफत का ज़हूर हुआ तो इब्लीस मायूस हुआ और जाहिरी इबादत के रायगाँ जाने पर हसद में सब कुछ किया और मलऊन हुआ।

2. यानी अल्लाह के इल्म में पहले ही से काफिर था औरों पर अब जाहिर हुआ या यूँ कहो कि अब काफिर हो गया इस वजह से इलाही हुक्म का घमन्ड की वजह से इन्कार किया और इलाही हुक्म को खिलाफे हिकमत व मसलिहत और शर्म का सबब समझा यह नहीं कि फकत सज्दा ही नहीं किया।

3. मशहूर है कि वह दरख्त गेहूँ का था या कुछ कौल के मुताबिक इलमी या अगूँर या तुरजं वगरैह का वल्लाहु अअलम।

4. कहते है कि हज़रत आदम और हव्वा बिहिश्त में रहने लगे और शैतान को उस इज्जत की जगह से निकाल दिया। शैतान को और हसद हुई आखिरकार मोर और साँप से मिल कर बिहिश्त में गया और बीबी हव्वा को तरह–तरह से ऐसे फुसलाया और बहकाया कि उन्होंने वह दरख्त खा लिया और हज़रत आदम को भी खिलाया और उनको भी यकीन दिला दिया था कि इसके खाने से अल्लाह के हमेशा के लिए मुकर्रब हो जाआगे और हक़ तआला ने जो रोका था उसका सबब गढ़ कर बयान कर दिया।

5. इस खता की सजा में हज़रत आदम अ0 और हव्वा से पैदा होने वाली औलाद की निसबत यह हुक्म हुआ कि बिहिश्त से ज़मीन पर जा कर रहो वहाँ तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे। जिस की वजह से तक्लीफें पेश आएंगी,

शेष पृष्ठ 28

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अनु0 : नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

अमतुल्लाह तस्नीम

मज्लिस के आदाब का बयान

किसी को उठाकर बैठने की मनाही

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई किसी को उठाकर उसकी जगह न बैठे और मज्लिसों में फैलाव और गुन्जाइश पैदा करो। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) के वास्ते जब कोई जगह खाली कर देता तो वह उस जगह पर नहीं बैठते थे। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि0) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई आदमी किसी मज्लिस से उठकर जाए और फिर पलटै तो वह अपनी जगह का ज्यादा मुस्तहिक (पात्र) है। (मुस्लिम)

जहाँ जगह पाए बैठ जाए

हज़रत जाबिर (रज़ि0) बिन समरह से रिवायत है हम लोग जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आते थे तो हममें का हर एक जहाँ पहुँचता वही बैठ जाता। (अबूदाऊद)

जुमा के दिन दो आदमियों के बीच में घुस कर बैठने की मनाही

हज़रत अबू अब्दुल्लाह सलमान फारसी (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आदमी जुमा के दिन गुस्ल (स्नान) करता है और जितना पाक हो सकता है पाक होता है फिर उसके घर में जो कुछ इत्र व तेल उपलब्ध है वह लगाता है और दो आदमियों को हटाकर बीच में नहीं बैठता, फिर जितना उसे भाग्य में है नमाज पढ़ता है, और फिर जब इमाम ख़ुत्बा दे तो खामोशी से सुनता है तो एक जुमा से दूसरे जुमा तक के छोटे गुनाह मुआफ हो जाएंगे। (बुखारी)

साथ बैठने वालों को अलग न करें

हज़रत अम्र बिन शुऐब (रज़ि0) से रिवायत है अपने बाप और वह अपने दादा से रिवायत करते है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आदमी को ये जाइज नहीं कि दो आदमियों को अलग–अलग कर दे मगर हाँ उनकी इजाजत से। (अबूदाऊद व तिर्मिजी)

अबूदाऊद की एक रिवायत में है कि दो आदमियों के बीच में न बैठे मगर उनकी इजाजत से बैठ सकता है।

लोगों के ठीक बीच में बैठना

हज़रत हुजैफा (रज़ि0) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हल्का (गोलाई) के बीच में बैठने वाले पर लानत फरमाई है। (अबूदाऊद)

तिर्मिजी में है कि एक आदमी लोगों के ठीक बीच में बैठा था। हज़रत हुजैफा (रज़ि0) ने कहा जो हल्का (बीच) में बैठता है उसपर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जबान से लानत की गई है या अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जबान से लानत की है।

बेहतरीन मज्लिसें

हज़रत अबूसईद खुदरी (रज़ि0) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इर्शाद फरमाते सुना है कि बेहतरीन मज्लिसें वह हैं जिनमें कुशादगी (फैलाव) ज्यादा हो। (अबूदाऊद)

मज्लिस का कफ्फारह

हज़रत अबूहुरैरह (रज़ि0) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो किसी मज्लिस में बैठकर बात चीत और गपशप में वक्त गुजारे तो उसको चाहिये कि उठने से पहले इन वाक्यों को कहले "अनुवाद : "पाक है तू ऐ अल्लाह,

तेरी ही तारीफ है, मैं गवाही देता हुँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं तुझसे बख्शिश चाहता हुँ और तौबः करता हुँ।'' तो उसकी तमाम खताएं जो इस मज्लिस में उससे हुई मुआफ हो जांएगी।

(तिर्मिजी)

हज़रत अबू बरज़ह (रज़ि0) से रिवायत है कि ऐसा बहुत कम होता था कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी मज्लिस से उठने का इरादह फ़रमाया हो और उठने के बाद ये दुआ न पढ़ी हो, अनुवाद : ''पाक है तू ऐ अल्लाह, तेरी ही तारीफ है, मैं गवाही देता हुँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं तुझसे बख्शिश चाहता हुँ और तौबः करता हुँ।'' एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! अब आप ऐसी बात कहते हैं कि इससे पहले कभी नहीं कही, आपने फ़रमाया ये मज्लिस के गुनाहो का कफ्फारह है। (अबूदाऊद)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) से रिवायत है कि ऐसा कम होता था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी मज्लिस से बगैर ये दुआ पढ़े उठ जाते। तर्जुमा : ''ऐ अल्लाह हमको अपना खौफ इस कदर दे जो हमारे और तेरी नाफरमानी के बीच दीवार हो जाएं और अपनी फरमाँबरदारी ऐसी नसीब फरमा जो तेरी जन्नत तक हमको पहुँचा दे और यकीन ऐसा इनायत फरमा जिससे दुन्या की हर मुसीबत हम पर आसान हो जाए। ऐ अल्लाह हमारे कानों, हमारी आँखों और हमारी ताकत से हमको ज़िन्दगी में नफा पहुँचा और हर एक को हमारा वारिस कर और हमारा बदला ले उससे जो हम पर जुल्म करे और ऐसे आदमी पर हमारी मदद कर जो हमसे दुश्मनी रखे और हमारे दीन में कोई मुसीबत हमपर न डाल और दुन्या को हमारा लक्ष्य न बना और उस आदमी को हम पर मुसल्लत न कर जो हम पर रहम न करें।

(तिर्मिजी)

❑❑

शुऊर (समझ और सलीक़:) की दीक्षा

– हजरत मौलाना अलीमियाँ नदवी रह0

''एक बड़ी जरूरत और खिदमत यह है कि उम्मत के विभिन्न वर्गों और अवाम में सही शुऊर (समझ और सलीक़:) पैदा किया जाये और जनता को बौद्धिक, नागरिक तथा राजनीतिक दीक्षा दी जाये। याद रहे कि शिक्षा के प्रसार और शिक्षित व्यक्तियों की बाहुल्यता (कसरत) से यह लाज़िम नहीं आता कि कौम (नेशन) में शुऊर भी मौजूद हो। यद्यपि निःसन्देह शिक्षा के प्रसार से और ज्ञान के प्रकाशन से शुऊर पैदा करने के लिये हर हाल में निरन्तर प्रयास की जरूरत है। मुसलमान लीडर्स और मुसलमानों में इस्लाही (सुधारात्मक) काम करने वालों को भली प्रकार समझ लेना चाहिये कि जिस कौम में शुऊर की कमी है उस पर भेरासा नहीं किया जा सकता, चाहे उसे अपने लीडर्स पर कितना ही विश्वास हो और वह उनकी पैरवी और अनुकरण व आज्ञापालन में कैसी ही चुस्ती और सरगर्मी दिखाये और कितने ही महान त्याग पेश करे। इस लिये कि जब तक उसका शुऊर तैयार नहीं और बालिग़ नजर और पुख़्तः ख़्याल न हो, हर पल इसका खतरा है कि वह किसी दूसरी दावत (आवाहन) और आन्दोलन का आल'–ए–कार बन जायेगी और आन की आन में वर्षों की मेहनत पर पानी फिर जायेगा। जिस कौम का शुऊर बेदार नहीं और जिसमें खुद सोचने और अच्छा–बुरा समझने की सलाहियत (क्षमता) पैदा नहीं हुई उसकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई पंख (पर) मैदान में पड़ा हो और विभिन्न दिशाओं की हवायें उसको इधर से उधर उड़ाती फिरती हों।''

(तामीरे हयात लखनऊ 10 सितम्बर 2010 से साभार)

– प्रस्तुति : एम0 हसन अंसारी

❑❑

शहादते हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हु

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

एक हदीस के अनुसार 30 वर्षों तक खिलाफते राशिदा रही, तीसरे खलीफा हज़रत उसमान के आखिरी दौर से फितनों का जोर हुआ जो तीस साल के बकीया सालों तक जारी रहा जिस में एक लाख से जियादा लोग जाँबहक हुए उन में से नेक नीयत वालों ने तो शहादत पाई दूसरो का हाल ख़ुदा जाने। उस फित्ने के दौर में सहाब–ए–किराम सब के सब हक़ पर जमे रहे और ख़ुलफाए राशेदीन सही दीन की कियादत में हक़ बजानिब रहे। जिन सहाबा ने ख़ुलफाए राशिदीन की मुखालफत की उनको इजतिहादी गलती पर माना गया। इस पर उनसे मुआख्जा न होगा बल्कि एक सवाब के मुस्तहिक होंगे।

जब तीस साल पूरे हो गये और हज़रत हसन (रज़ि0) ने हज़रत मुआविया (रज़ि0) से सुलह कर ली तो हदीस के मुताबिक खिलाफते राशिदा तमाम हुई और मुलूकीयत (बादशाही) का जमाना आया उसके पहले बादशाह हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि0) हुए, उनके दौर को भी बुरा कहना बुरा है एक तो वह सहाबी थे सहाबी को बुरा कहना सराहतन (स्पष्टतया) मना है, दूसरे यह कि अल्लाह का फैसला था जिस की खबर अल्लाह के रसूल ने दी थी और उसकी बुराई न की थी अलबत्ता हज़रत मुआविया (रज़ि0) के दौर के बाद के फित्नों का रिवायात में इशारा मिलता है।

हज़रत मुआविया (रज़ि0) का वक्त जब आखिर हुआ तो बड़ी नज़ाकतों का सामना था। हज़रत मुआविया के बाद मुआशरा किसी एक पर मुत्तफिक नज़र न आ रहा था फिर अब तो मुलूकीयत थी हज़रत मुआविया ने अपने बाद अपने बेटे यजीद को नामजद कर दिया, हज़रत मुआविया सहाबी थे, कातिबे वही थे हुजूर सल्ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निसबती भाई थे उन्होंने अपने इजतिहाद से काम लिया अगर उनसे चूक हुई तो भी वह एक सवाब के मुस्तहिक हैं। बाज सहाबा ने इस फैसले से इख्तिलाफ किया जब कि बाज सहाबा ने इत्तिफाक किया इख्तिलाफ करने वालों में पाँच नाम आते है हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र, हज़रत हुसैन बिन अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजियल्लाहु अन्हुम। यह सहाबा भी या तो हक़ बजानिब थे या फिर इजतिहादी गलती पर थे।

हज़रत मुआविया की वफात के बाद यजीद तख़्ते हुकूमत पर बैठा यह सहाबी न था। मुखालिफीन में हज़रत अब्दुर्रहमान का इन्तिकाल हो चुका था।

इब्ने कसीर की रिवायत के मुताबिक बाद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने यजीद की खिलाफत तसलीम कर ली थी अब सिर्फ दो सहाबी मुखालफत पर थे, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर और हज़रत हुसैन बिन अली रजियल्लाहु अन्हुम।

हज़रत मुआविया (रज़ि0) की वफात पर यह दोनों हजरात मदीना मुनव्वरा में मुकीम थे, यजीद के हुक्म से हाकिमे मदीना ने दोनो हजरात को तलब कर के यजीद की बैअत तलब की दोनों हजरात ने इन्कार कर दिया और हीला कर के घर वापस आए और मदीना से मक्का चले गये। अजीब बात है अहले मदीना या तो यजीद की खिलाफत से मुत्तफिक थे या यजीदी ताकत से इतने डरे हुए थे कि इन दोनो हजरात का साथ न दे सके।

मक्के में दोनो हजरात महफूज थे लेकिन हाकिमे वक्त की मुखालफत का खतरा तो सामने था ही। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर अहले मक्का को अपना हमनवा बना कर अपनी खिलाफत की राह हमवार करने लगे, जब कि हज़रत हुसैन (रज़ि0) को

उनके वालिद के दारूल खिलाफत कूफा के लोग दावत देने लगे कि आप आएं और कूफे की इमारत संभालें। चुनाँचे हज़रत हुसैन का कूफा जाने का रूजहान हो गया ये रूजहान फित्री था। इस लिये कि हाकिमे वक्त की मुखालफत की थी तो कोई ताकत भी तो चाहिये थी।

हज़रत हुसैन (रज़ि0) ने हालात मालूम करने के लिये अपने चचाजाद भाई मुस्लिम बिन अकील को कूफा भेजा जब वह कूफा पहुँचे तो उनका बड़ा इस्तिकबाल हुआ और लगभग 18 हजार लोगों ने हज़रत मुस्लिम के हाथ पर हज़रत हुसैन के लिये बैअत कर ली बाज रिवायात में इससे जियादा ताअदाद लिखी है। हज़रत मुस्लिम ने यह खबर हज़रत हुसैन (रज़ि0) को भेजवा दी।

हज़रत हुसैन को यह खबर पहुँची, खुशकुन खबर थी। उन्होंने ने कूफा जाने की तैयारी शुरू कर दी जब यह खबर मक्के में फैली तो मक्का के बड़े–बड़े लोगों ने हज़रत हुसैन (रज़ि0) को कूफा जाने से रोका। उन रोकने वालों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर के नाम अहम हैं।

तबरी की एक रिवायत में तो यह भी है कि इब्ने जुबैर ने कहा कि मैं अपके हाथ पर बैअत करूंगा आप मक्के की खिलाफत संभालिये मगर हज़रत हुसैन (रज़ि0) ने किसी की न मानी यह आपका इजतिहाद था। मक्के वालों ने आप को पुरनम आँखों से रूखसत किया बाज ने तो यह भी कहा कि एक क़तील व शहीद को रूखसत करता हूँ मगर इब्ने जुबैर के सिवा किसी ने यह न कहा कि कूफा के बजाए आप मक्के कि कियादत संभालिये न मक्के वालों में से किसी ने आपके साथ सफर का इरादा किया। आप अहल व अयाल के साथ रवाना हो गए। अभी रास्ते ही में थे कि हज़रत मुस्लिम की शहादत की बुरी खबर आ गई, अब न लौटते बन रहा था न आगे बढ़ते, हज़रत मुस्लिम के घर वालों ने कहा हम को तो मुस्लिम का इन्तेकाम लेना है या अपनी जान देनी है, हज़रत हुसैन (रज़ि0) की हमीयत ने भी यही कहा शायद अब औरतें मक्के वापस कर दी जाती मगर वह कूफी जो खुतूत ले कर आए थे वह साथ थे उन्होंने कहा हज़रत मुस्लिम और थे आप और हैं आपको देखते ही कूफा में इन्कलाब आ जाएगा। हज़रत हुसैन ने भी ऐसा ही गुमान किया काफिला बढ़ता रहा, कूफा अभी दूर ही था कि हुर एक हजार यजीदी फौज के साथ सामने आ गया, कोई छड़प न हुई जुहर की नमाज हज़रत हुसैन (रज़ि0) ने पढाई यजीदी फौज ने भी आप के पीछे नमाज़ अदा की बाद नमाज हुर ने कहा मुझे हुक्म है कि मैं आपको कूफा के सफर से रोकूं साथ ही मक्का और मदीना की तरफ भी न जाने दूँ। हज़रत हुसैन (रज़ि0) ने कूफियों के खुतूत ढ़ेर कर दिये और फ़रमाया कि मुझे तो बुलाया गया है मैं बुलाने पर आया हूँ। हुर ने कहा इन खुतूत से मेरा कोई वास्ता नहीं मुझे जो हुक्म है मैं वही करूंगा। आप यजीद से अपना मुआमला तय कर सकते हैं। आप (रज़ि0) के पास यजीद से खत व किताबत की न तो सुहूलत थी न ही यह आपको पसन्द था। आप कूफा और हिजाज़ का रास्ता छोड़कर एक तरफ चल दिये यजीदी फौज निगरानी कर रही थी। करबला के ज़मीन पर पहुँच कर आपने पड़ाव किया यह मुहर्रम 61 हि0 की 2 तारीख थी। जब मौजूदा करबला से फुरात नदी 3 कि0मी0 के लगभग फासले पर है इस लिये इतनी दूर से पानी लाना बहुत मुश्किल था लिहाजा फुरात का पानी बन्द किया जाना एक कहानी है या फिर वह करबला जहाँ वाकिया हुआ कोई और होगा जो फुरात के करीब रहा होगा, फिर दूसरी बात यह कि बाज रिवायात में आया है कि हज़रत हुसैन जो सब से आखिर में शहीद हुए गुस्ल कर के मैदान में आए थे इसका मतलब यह हुआ कि खेमे में पानी था।

यजीदियों की नीयत खराब थी इन जुहद व तकवा वाले नहीफ व नज़ार 72 अफराद के मुकाबले 4 हजार की मुसल्लह फौज इब्नि जियाद ने सामने कर दी और इब्नि जियाद बदनिहाद के हाथ पर यजीद

के लिये बैअत का मुताबला हुआ आपने इन्कार कर दिया और जब आपने देखा कि दबाव बराबर बढ़ रहा है तो आपने तीन मुतालबात रखे, (1) मुझे हिजाज वापस जाने दिया जाए। (2) मुझे यजीद के पास जाने दिया जाए। (3) मुझे किसी सरहद की तरफ जाने दिया जाए। मगर इब्नि जियाद ने एक न सुनी। अपने हाथ पर यजीद के लिये बैअत या फिर लड़ाई पर अड़ा रहा। आखिरकार 10 मुहर्रम 61 हिजरी की सुब्ह को यजीदियों की तरफ से तीर आने लगे, इधर भी मुजाहिदीन तीर व तलवार लेकर मुकाबले पर आ गये और यके बाद दीगरे शहीद होते गये। उसी दौरान हुर को तनब्बुह हुआ वह यजीदी फौज को छोड़ कर हज़रत हुसैन की तरफ आ गये और लड़कर शहीद हो गये। दूसरे मुजाहिदीन भी लड़–लड़कर शहीद होते रहे आखिर में हज़रत हुसैन (रज़ि0) भी शहीद हो गये इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। जिनकी जान लेने में न हिचकिचाए उनकी लाश का वह क्या एहतारम कर सकते थे जो कुछ भी किया हो हज़रत हुसैन (रज़ि0) का सर तन से जुदा किया गया। और बीमार जैनुल आबिदीन और मस्तूरात के साथ यह कारवाँ इब्नि जियाद के दरबार कूफा में लाया गया जहाँ उस ने हज़रते हुसैन के सर के साथ बे अदबी की। फिर यह काफिला दमिश्क ले जाया गया और यजीद के दरबार में पेश किया गया, वहाँ दो तरह की बाते नक्ल की गई है एक यह कि यजीद ने फख्र व मुवाहाल के अशआर पढ़े लेकिन इब्नि कसीर की राय है यह किसी मुखालिफ ने गढ़ कर यजीद से जोड़ दिया। दूसरी बात यह कि यजीद ने आँसू बहाए और इब्नि जियाद पर लानत की मगर यह सहीह है कि उसने इब्नि जियाद को कोई सजा न दी।

यह काफिला यजीद के घर महीनो रहा, उनको हर तरह से आराम पहुँचया गया और फिर बड़े एहतिराम से के साथ मदीना मुनव्वरा रवाना कर दिया गया। हज़रत जैनुल आबिदीन ने उसके बाद यजीद की मुखालफत न की और हर्रा के वाकिअे में हिस्सा न लिया। करबला के वाकिया और नवास–ए–रसूल के शहीद किये जाने पर हर मुसलमान को गम हुआ और होना भी चाहिये। करबला के वाकिअे से हम को यह सबक मिलता है कि जिस बात को हक़ समझे उस पर जम जाए और उसके मुकाबले में जान व माल की परवाह न करे। लेकिन करबला के वाकिअे के बाद जो बिदआत व ख़ुराफात इजाद हुई जैसे ताजियादारी, अजादारी, सीना कूबी, मातम, अलम, ताजियों पर चढ़ावा, ताजियों से मन्नत मानना वगैरह इन सब का अहले सुन्नत व जमाअत से कोई तअ़ल्लुक नहीं है यह वह मसअला है जिस में बरेली व देवबन्द दोनों मुत्तफिक है।

सोचना चाहिये सय्यिदुशुहदा हमजा (रज़ि0) का ताजिया कोई नहीं रखता, हज़रत उमर व हज़रत उसमान (रज़ि0) शहीद हुए उन पर कोई मातम नहीं करता, फिर हज़रत जैनुल आबिदीन से हज़रत हुसैन के लिये न नौहा व मातम साबित है न ताजिया आखिर हम किस की पैरवी में हज़रत हुसैन के साथ यह सब कर रहे है, अहले सुन्नत व जमाअत को इन ख़ुराफात से दूर रहना चाहिये।

हमको चाहिये कि हम शुहदा–ए–करबला, ख़ुसूसन हज़रत हुसैन (रज़ि0) के लिये मगफिरत की दुआ करें उन को इसाले सवाब करें और यह सभी शुहदा–ए–इस्लाम के साथ करें और अहद करें कि जिस तरह उन्होने हक़ के लिये जान कुर्बान कर दी ज़रूरत पर हक़ के लिए हम भी अपनी जान कुर्बान कर देंगे, लेकिन हक़ का साथ न छोड़ेंगे अल्लाह हमारी मदद फरमाए आमीन!

सय्यिदुना हज़रत हुसैन रजियल्लाहु अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चहीते नवासे हैं, सहाबिये रसूल हैं और एक हदीस के मुताबिक अपने भाई हसन (रज़ि0) के साथ जन्नत के जवानों के सरदार हैं। गोया कि करबला के वाकिअे से बहुत पहले जन्नत की बशारत पा चुके हैं।

शेष पृष्ठ 10

किस्त : 22

जगानायक

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

- अनु0 : मुहम्मद गुफ़रान नदवी

फिर ऐसी बरकत हुई कि अल्लाह तआ़ला के बहुत से नबी उनके बेटे हज़रत इसहाक की औलाद में होते रहे और इस पैगाम को आगे बढ़ाते रहे, उनकी इसी विशेषता की वजह से अल्लाह तआ़ला ने उनकी शाख को बड़ा मरतबा अता फ़रमाया लेकिन फिर हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम की यह शाख जो बनी इसराईल के नाम से मशहूर हुई क्रमशः सीधे रास्ते से हटती चली गई।

फिर आखिर में अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दूसरे बेटे हज़रत इस्माइल अलैहिस्सलाम की औलाद में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विश्व व्यापी नबी बनाकर मबऊस किया और उनको ताकीद की कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का रास्ता तुम्हारा रास्ता है जिनकी औलाद में अल्लाह तआ़ला ने नबी भेजे और उन सबने अपने–अपने जमाने में ''तौहीद'' की दअवत दी। और वह अल्लाह तआ़ला के हुक्मों पर अमल करने की दअ़वत देते रहते थे जैसा कि हज़रत इब्राहीम ने उनकी ताकीद तलकीन (उपदेश) की थी, कुर्आन मजीद में है :

''और इब्राहीम ने अपने बेटे को इसी बात की वसीयत की और यअकूब ने भी (अपने फरजन्दों से यही कहा कि) बेटो! ख़ुदा ने तुम्हारे लिये यही दीन पसन्द फ़रमाया है मरना तो मुसलमान ही मरना।''

(सूरह बकरः 132)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पूरी ताकत इसी दअवत पर उसके मुताबिक अमल करने में सर्फ कर दिया था और बड़ी तकलीफें और कुरबानिया बरदाश्त करने के साथ मक्का मुअज़्ज़मा के मुकाम पर बैतुल्ला शरीफ की पहले से नियुक्त जगह पर अल्लाह के घर का नव निर्माण किया। ताकि वहाँ से तौहीद का परचम बुलन्द हो, वहाँ पर उन्होंने अपने दूध पीते बच्चे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को उनकी माँ के साथ बसाया, उनका यही बच्चा हज़रत इस्माईल यहाँ तौहीद (एकेश्वरवाद) की इशाअत (प्रचार) का ज़रिआ बना और उनकी औलाद सबसे कटकर एक अल्लाह की इबादत पर काएम रही उनका अहद व पैमान (प्रतिज्ञा) था कि लोगों को तौहीद की दअवत देंगे और हक़ बात की तलकीन (उपदेश) करेंगे, यह सिलसिला काएम था कि वहाँ का एक शख्स इराक और शाम के सफर में बुतों की इबादत देख कर प्रभावित हुआ और बुत यहाँ ले आया, उसके असर (प्रभाव) से बुत परस्ती का अमल व दखल शुरू हो गया, अन्ततः फिर उसी खानदान के एक अद्वितीय व्यक्ति को अल्लाह तआ़ला ने दअवते इब्राहीमी ताजा करने और उसी फिक्र व अकीदे पर दुनिया को लाने के लिये इन्तिखाब (चयन) किया, उन्हीं पर नबूवत को मुकम्मल किया और उनके मानने वालों को यह काम सुपुर्द किया कि वह नस्ल दर नस्ल इस मिशन को तरक्की दें कि वह लोगों को सिर्फ एक अल्लाह की इबादत का पाबन्द बनाएं और अपने ख़्याली और हाथ से बनाए हुवे ख़ुदाओं को बातिल (मिथ्या) समझें, और इस बात पर यकीन को आम (प्रचलित) करें कि तमाम दुनियाओं का काम काज सिर्फ एक अल्लाह के हाथ में है उसी ने सबको पैदा किया, और पैदा करके यूं ही छोड़ नहीं दिया, बल्कि अपनी इबादत व इताअत की पाबन्दी का हुक्म दिया कि सारी मखलूक (सृष्टि) को उसी के हुक्मों (आदेशों) पर चलना है। जो भी उसके हुक्मों से मुँह मोड़ेगा उसे दूसरी आने वाली ज़िन्दगी में जवाबदेह होना पड़ेगा

और सजा पाएगा।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत से पहले मक्के वाले तौहीद (एकेश्वरवाद) के मुआमलें में अपने रास्ते से बहुत भटक गए थे जिसके सुधार की सख्त ज़रूरत थी, उस ज़रूरत को अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी बनाकर पूरा किया, मक्के वालों के मूरिसे आला (मूलपुरूष) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से पहले ही यह दुआ कर ली थी कि इन लोगों की इस्लाह व तजकिया (आत्म सुधार) और तअ़लीम के लिए इन्ही में से नबी भेजिये, अल्लाह ने उनकी दुआ कुबूल कर ली थी, फिर एक लंबे समय का अवसर देकर उन्हीं की औलाद में से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुनतखब (निर्वाचित) किया और यह एलान भी कर दिया कि अब इनके बअद कोई दूसरा नबी किसी भी जगह और कभी नहीं आएगा, यही आखिरी नबी हैं जो सबके लिये हैं और सारे जमानों के लिये हैं, इस तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिली हुई नबूवत उनके जद्दे आला (पितामह) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नबूवत का एक तरह का तसलसुल (निरंतरता) था, और दोनों एक ही राह के राहरौ (पथिक) थे।

अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब में जो अपने नबी पर नाज़िल फरमाई हालात और ज़रूरत के मुताबिक क्रमशः आपको अपने फरिश्ते के ज़रिए आयतें पहुँचाई और ईमान और नेक अमल की रहनुमाई के साथ साथ बड़े अच्छे और प्रभावित ढंग में पिछली कौमो और नबियों के ऐसे हालात भी बयान किये जिनसे मअलूम हुआ कि शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और गुनाहों पर अमल करते रहने पर किस तरह अल्लाह तआ़ला का गजब (प्रकोप) नाज़िल हुआ।

लिहाजा अगर इसी तरह के हालात मक्के वाले, अरबों और उनका साथ देने वाले अरब कबीलों में होंगे तो उनपर भी अल्लाह तआ़ला का गजब (प्रकोप) अजाब की सूरत में नाज़िल हो सकता है, लिहाजा यह लोग इन वाकिआत (घटनाओं) से सबक लें और समझें कि पिछली कौमों की नाफरमानी (अवज्ञा) और बद दीनी पर कैसी सख्त सजाएं दी गईं लिहाजा नबी की बात मानें और सत्य मार्ग पर आ जाएं और नबी की रहनुमाई (मार्गदर्शन) में अपने को दुरूस्त करें, जिनकी सीरत और अख़लाक़ (जीवन चरित्र और सद्व्यवहार) के गुण से वह भली भाँति पहले ही से परिचित हैं।

जारी....

❑❑

शहादते हुसैन (रज़ि0) ....

उन्होने जो कुछ किया अपने इजतिहाद से किया, उनका इजतिहाद अल्लाह के वास्ते था। कूफा के बुजदिल धोखे बाजो पर यकीन किया यहाँ तक कि मैदाने करबला में घिर गये। जालिमों के जुल्म के सामने न झुके, हथियार न डाले। जालिमों को इस गुनाहे अजीम से बचाने की राह दिखाई कि मुझे वापस जाने दो या किसी तरफ जाने दो या यजीद के पास जाने दो लेकिन जालिमों ने अपनी आकिबत खराब की एक न सुनी, मजबूरन 4 हजार के मुकाबले पर 72 अनफास ने भी तलवार सौत ली और मरदाना वार लड़ते हुए शहीद हो गये अल्लाह उन सबके दर्जे बुलन्द फरमाए। हज़रत हुसैन के दरजात में और इजाफा हुआ। आपके हक़ में बदगुमानी करने वाला अपनी आखिरत ख़ुद खराब करेगा हम हज़रत हुसैन से मुहब्बत रखते हैं, आपके लिये मगफिरत और नुजूले रहमत की दुआ करते हैं।

रहा यजीद तो उसके बारे में अहले सुन्नत व जमाअत में तीन रायें पाई जाती हैं। हज़रत इमाम अहमद हबंल (रह0) यजीद को लानत का मुस्तहिक करार देते है इमाम गजाली जैसे बुजुर्ग उसे इस्लाम से खारिज नहीं समझते हैं; हमारे इमाम अबू हनीफा (रह0) उसके बारे में खामोशी मुनासिब समझते हैं, और यही राय एहतियात की है।

❑❑

क़िस्त – 1

हममें सुधार कैसे हो?

– मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी

अनु0 – नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

परिचय कम प्रशंसा अधिक

एक रस्म परिचय की चल पड़ी है यूँ भी पहले से ही बहुत सी रस्में चली आ रही हैं, कुछ का प्रत्यक्षदर्शन (मुशाहिदा) आपने किया होगा, लेकिन परिचय का रिवाज यदि केवल परिचय हेतु हो तो हर्ज नहीं मगर अधिकतर परिचय–परिचय कम होता है और प्रशंसा अधिक।

परिचय की आज्ञा है लेकिन तारीफ की इजाजत नहीं। हदीस से तो ऐसा ही मालूम होता है इसलिए मुँह पर किसी की तारीफ करना पसन्दीदा अमल नहीं है। पवित्र कुर्आन में कबीलों और बिरादरियों का वर्णन है जिससे कौमों और बिरादरियों की हैसियत भी मालूम होती है और उद्देश्य भी। इसी के मद्देनज़र यदि जातियों में, समुदायों में, विभिन्न क्षेत्रों में रहने और बसने वालों में आपस में परिचय हो तो झगड़े न हों। लेकिन वहाँ भी तारीफ शुरू हो जाती है कि ये उच्च जाति है और वह निम्न जाति है। परिचय से जहाँ हटे तो झगड़े शुरू हो गए। परिचय अच्छी पहचान को कहते हैं, जैसा कि हदीस में आता है कि अश्अरी लोग बहुत खूब हैं, जब उनके यहाँ गल्ला आदि की कमी हो जाती है तो जिसके पास जो कुछ होता है एक जगह ला कर इकट्ठा कर लेते और सब मिलकर खा लेते हैं, इसी प्रकार कौम व बिरादरी की अच्छी पहचान होनी चाहिये कि अमुक समुदाय के लोग बिना जहेज के शादी करते है, अमुक जाति में सहयोग की भावना बहुत है आदि। ऐसे ही जब इन्सान तआरुफ (परिचय) से हटकर तारीफ पर आता है तो दिल बिगड़ जाता है और उसके अन्दर स्वेच्छाचार (ख़ुदपसन्दी) दंभ और अभिमान पैदा होने लगता है। मौलाना रूम ने भी कहा था कि **"जानवर खाने पीने से मोटा ताज़ा होता है और इन्सान अपनी तारीफ सुनकर फूलता है।"**

इसलिए अल्लाह के भले बन्दे दिल पर ऐसी मेहनत करते हैं कि प्रशंसा और निन्दा का उनपर प्रभाव न हो।

इसी प्रकार चाहे कोई उनकी कैसी ही प्रशंसा करे, चाहे कोई कितनी ही निन्दा करे दोनों उनके लिए बराबर हैं। क्योंकि जब प्रशंसा होती है तो समझते हैं कि ये उसकी तारीफ है जिसने मुझे सब कुछ दिया, बोलने की शक्ति दी और समझने की योग्यता दी। जैसे ये लाउडस्पीकर लगा हुआ है, उसकी आवाज दूर तक जा रही है यदि कोई प्रशंसा करे के लाउडस्पीकर बहुत अच्छा है और इस पर लाउडस्पीकर इतराने लगे कि मैं बहुत अच्छा हुँ हालाँकि बेचारे की क्या हैसियत है, अभी जरा तार हटा दिया जाए तो छुट्टी हो जाएगी, मसला खत्म। असल तो हमारी आवाज है, लाउडस्पीकर की नहीं। इसी तरह मामला अल्लाह का है वह जब चाहे दे और जब चाहे ले ले। मसलन कोई शेरवानी पहनकर आए। उम्दा किस्म की हो, बड़ी फिट, मगर हो किसी और की, बेचारा किसी से माँग कर लाया और पहन ली, लेकिन शरीर पर उसके बड़ी फिट है और लोग तारीफ पर तारीफ किये जा रहे हैं कि क्या शेरवानी है! वाह, वाह, माशाअल्लाह तो शेरवानी पहनने वाले को एक पल के लिए भी ये विचार नहीं आएगा कि शेरवानी मेरी है, इसलिए कि वह जानता है कि उधार लेकर आया हुँ, अभी उतार देनी है, अभी वहाँ जाकर वापस करना है, तो तारीफ की हैसियत भी ऐसी ही है। लेकिन जब आदमी हम जैसा हो तो बिगड़ने की आशँका अधिक होती है कि मैं प्रशंसा का पात्र हुँ, तभी तो मेरी

प्रशंसा की जा रही है। ये भी एक सीमा तक ठीक था, पिता अच्छे थे, दादा अच्छे थे, लेकिन दादा पिता के अच्छे होने से बेटा पोता भी अच्छा हो जाए ये कब जरूरी है। हाँ, ये अवश्य कुर्आन में है कि जिसके पिता अच्छे होते हैं उसका लाभ बेटे को मिलता है। कुर्आन से प्रमाणित है। अतः हम सबको अच्छा बनना चाहिये ताकि हमारे बेटे लाभ उठाएं, उसी का नाम इस्लाहे मुआशरा है।

इस्लाहे मुआशरा उसे कहते है कि जिसके तहत हम अपने आप को सुधारें अर्थात् जब प्रशंसा की जाए तो अल्लाह की समझें और जब बुराई की जाए तो ये समझें कि उसको तो कम मालूम है अगर ज्यादा मालूम हो जाता तो और कहता। अपने गुनाह जब सामने होंगे तो कोई कितनी बुराई करे अल्लाह का शुक्र अदा करेगा कि चलो उसको कम मालूम है। और डरता रहेगा कि और अधिक न मालूम हो जाए, नहीं तो लज्जित होना पड़ेगा। जब ये सोच हो जाती है तो आदमी ठीक हो जाता है। बस समाज सुधार की मंशा इतनी ही है कि दिल ठीक हो जाए, सोच ठीक हो जाए। यदि न दिल ठीक हो, न सोच, दोनों पहिये पन्चर हैं गाड़ी के तो गाड़ी किधर चली जाए पता नहीं। और इस समय हो यही रहा है। हमारी सोच बदल गई है, सोच इस तरह बदल गई है कि आजकल सभाओं में अकारण प्रशंसा की जाती है। **"कि दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है।"**

हमारे हज़रत मौलाना (अलीमियाँ नदवी (रह0)) एक बार कहीं जा रहे थे। रास्ते में पोस्टर लगा हुआ था जिसमें बड़ी–बड़ी उपाधियाँ अंकित थीं। हज़रत मौलाना ने कहा, समस्त भारतीय इतिहास में कुछ ही होंगे जिन पर ये उपाधियाँ फिट बैठती हैं। ऐसे तो कोई क्या बना हुआ है कोई क्या बना हुआ है। आजकल तो स्वार्थपरता इतनी बढ़ गई है कि यदि दूसरा न कहे तो स्वयं ही अपनी प्रशंसा आरम्भ कर देते हैं। अपने मुँह से भी खुद कि मैं फ़लाँ मौलाना बोल रहा हुँ। हमारे यहाँ लखनऊ में भी ऐसी घटनाएं होती रहती हैं। जैसे हमारे हज़रत मौलाना के पास एक सज्जन आए और अपने बेटे का परिचय कराते हुए कहने लगे कि ये हमारे "साहबजादे" हैं। इस पर हमारे हज़रत मौलना मुस्कुराए। अब स्पष्ट है कि आजकल उर्दू न जानने के कारण कोई समझता नहीं है कि अपने बेटों का परिचय "साहबजादा" कह कर नहीं कराया जाता। "साहबजादा" का अर्थ ये हुआ कि मैं "साहब" हुँ ये "जादा" है। अन्यथा असल तरीका तो ये था कि कहते कि ये "गुलाम जादा" है या ज्यादा से ज्यादा मेरा बेटा है। ये जबान न जानने के कारण है, मगर बात वही है। हज़रत मौलाना कासिम नानौतवी (रह0) के बारे में आता है कि ऐसे सादा रहते थे कि समझना मुश्किल होता कि इतने बड़े आलिम (विद्वान) हैं। यदि कोई सम्बोधित करके कहता "मौलाना" तो समझते कि किसी अन्य को आवाज दी जा रही है, और यदि कोई कहता "कासिम! तो तुरन्त आकृष्ट होते। ये है खाकसारी यही हाल हज़रत मौलाना अलीमियाँ नदवी (रह0) का था। और बार–बार देखा गया कि अन्तराष्ट्रीय व्यक्तित्व के बावजूद वह सादगी और नम्रता के चरम सीमा पर थे। लेकिन अब मामला उलटा हो गया है कि तवाजूअ (नम्रता) प्रशंसा हेतु हो गई है। लोग कहते हैं कि मैं कुछ नहीं हुँ, खाकसार हुँ। नाचीज हुँ। अब यदि कोई दूसरा कह दे कि हज़रते खाकसार साहब, फिर देखिये चेहरे का रंग किस तरह बदलता है। होना तो ये चाहिये कि दूसरे अगर बुराई करें तो बुरा न लगे। ये प्रतीक है कि मामला सही है। अपने मुँह से तो बहुत जोर से कहेंगे और अन्दर से है कि पलट कर आएंगे और कहेंगे कि नहीं हज़रत आप तो बहुत बड़े आदमी हैं, आपको अल्लाह ने बहुत ऊँचा स्थान दिया है। इसके सुनने के लिए कहते हैं कि खाकसार हुँ, मैं कुछ भी नहीं हुँ। लेकिन हाँ जो अल्लाह के नेक बन्दे थे उनका हाल वास्तव में यही था उसमें तनिक

भी अतिशयोक्ति नहीं। हज़रत मौलाना मुहम्मद अहमद साहब (रह0) को मैंने देखा, उनको संगत में रहने का अल्लाह ने मुझे अवसर दिया वह ये शेर कहते थे,

"मेरा ये एजाज कि
मैं कुछ भी नहीं हुँ
मुझको है इसपे नाज कि
मैं कुछ भी नहीं हुँ"

जब ये हाल बन जाए कि मैं कुछ भी नहीं हुँ, तब है बात! और मौलाना का ये हाल था। मौलाना ने कहा कि आजकल का हाल सुन लीजिए कि क्या है? ख़ुद मौलाना का ही शेर है। मौलाना का हाल वास्तव में यही था कि कुछ जानते ही नहीं। हालाँकि अल्लाह के बड़े–बड़े नेक बन्दे, बुजुर्ग उनकी खिदमत में जाया करते थे। हज़रत मौलाना अलीमियाँ नदवी (रह0) उनकी सेवा में उपस्थित होते थे। फिर उनका हाल ये था कि मैं तो कुछ नहीं जानता, ऐसी दशा थी उनकी और आज लोगों का हाल क्या है? उन्होने ख़ुद अपने शेर में बयान कर दिया है।

"हाल तेरा जाल है,
मकसूद तेरा माल है
क्या खूब तेरी चाल है,
लाखों को अन्धा कर दिया"

तो आजकल का जो हाल है, हवस वाला है। जानते हैं कि कहाँ रोएंगे तो लोग प्रभावित होंगे। कहाँ लम्बी दुआ करेंगे तो लोग जाल में फंसेगे। कहाँ भाषण लम्बा देंगे तो लोग फंसेगे। कहाँ लम्बी नमाज पढ़ेंगे तो लोग जाल में फंसेंगे। उद्देश्य लोगो को फाँसना है कि हमारे मानने वाले, हमारे चाहने वाले ही नहीं, हमें उपहार देने वाले, हमारे पीछे चलने वाले, हमसे हाथ मिलाने वाले बढ़ जाएं। और जब ये बात खत्म हो जाए तो हाल है अन्यथा जाल है चाल है। है कुछ भी नहीं। आजकल मामला यही चल रहा है, जिसको देखिए वही उस कार्य में लिप्त है। यहाँ तक कि बाकायदा किराये पर भी ये काम करवाए जा रहे हैं। प्रोपेगंडा किया जाता है कि हज़रत ऐसे हैं, हज़रत वैसे हैं, झूठे सपने झूठी बातें, ताकि लोग ये समझें कि हज़रत बहुत पहुँचे हुए हैं। पता नहीं कहाँ–कहां उनकी पहुँच है। आज सारा मामला यही है। हमे अपनी सोच ठीक कर लेनी चाहिये। इस्लाम क्या करता है? सोच बदल देता है और हृदय स्थिति में परिवर्तन कर देता है। मामला हल हो जाता है। आज यही दो चीजे नहीं बदल रही हैं, शेष बदल रही हैं।

सदाचारी बनते नहीं सुधारक बन जाते है

बहुत से लोग ऐसे हैं कि उनको सुधार करने का शौक पैदा हो गया है। मौलाना अब्दुल बारी नदवी (रह0) ने भी ये बात लिखी है कि लोग सदाचारी (सालेह) बनते नहीं सुधारक (मुस्लेह) बन जाते हैं और जो सत्कर्मी न बने और सुधारक बन जाए तो वह समस्या खड़ा कर देता है, जिससे सुधार नहीं बल्कि बिगाड़ पैदा हो जाता हैं। आज इसीलिए सुधार नहीं हो पा रहा है। जो सुचरित्र नहीं अर्थात् आप स्वयं गलत काम कर रहे हैं तो आप किस आधार पर दूसरों को टोक रहे है। उपदेश दिया जा रहा है कि ये न कीजिए वह न कीजिए, शादी–ब्याह में बेजा खर्च नहीं होना चाहिये। जो उपदेश दे रहा है स्वयं उसके घर में अपव्यय हो रहा है। उसके बेटे का विवाह हो रहा है, खूब खर्च कर रहा है और उपदेश ऐसा दे रहा है कि मानो उससे बड़ा कोई समाज सुधारक पैदा ही नहीं हुआ। तो ऐसे सुधार से क्या लाभ? हमारे जो मजहबी बुजुर्ग थे, जब सुधार (इस्लाह) करते थे तो पहले अपने को ठीक करते थे।

एक प्रसिद्ध घटना

एक औरत एक बुजुर्ग की सेवा में उपस्थित हुई और कहने लगी, हज़रत मेरा लड़का गुड बहुत खाता है, डाक्टर ने मना किया है, आप उससे कह दीजिए। आप लोगों की बात में असर होता है। ये छोड़ देगा। उन्होंने कहा, एक हफ्ते के बाद आना। जब एक हफ्ते के बाद वह आई तो कहा बेटे! गुड न खाना बहुत नुकसान करता है।, बुरी बात है। इस कहने पर उसने छोड़ दिया। उस महिला ने कहा एक हफ्ते तक गुड खाता रहा मगर

एक हफ्ते पहले ही मना कर देते तो क्या बात थी, इतने दिनों तक उसको नुकसान तो न उठाना पड़ता। कहने लगे मैं स्वयं बहुत गुड खाता था, एक हफ्ते तक छोड़ दिया, तब कहा। वह लोग इस प्रकार सुधारते थे तो सुधार होता था। आज सुधार हो तो कैसे? समाज सुधार हेतु जलसे जुलूस तो बहुत हो रहे है लेकिन सुधार हो ही नहीं रहा है। यही कारण है कि आज हर चीज उल्टी है। जैसे राजनीतिज्ञों के बारें में मशहूर है कि यदि कहें कि दिन है तो समझ लो कि रात है। यदि वह कोई घोषणा कर दें कि ऐसा होना है तो आप बिल्कुल समझ लीजिए कि नहीं होगा। आज हमारी स्थिति यही होती जा रही है। जब हमारा दिल खराब है तो सोच खराब होगी ही। सबको बस यही चिन्ता है कि हम सुधारक बना जाएं, हालाँकि स्वयं आत्म सुधार की आवश्यक्ता है। ये सोच अच्छी नहीं है। सुधारक अल्लाह बनाता है, नेक–भले हम बनें। हम जब नेक बनेंगे तो अल्लाह सुधारक बनाएगा। जबकि हमने उल्टा कर दिया, हम नेक, सदाचारी तो बनते नहीं, सुधारक बनने की चिन्ता से ग्रस्त रहते हैं हर किसी को टोकना, प्रत्येक को डाँटना, हर एक को कहना कि आप गलत हैं मगर अपने को देखते नहीं।

न थी हाल की जब हमें अपनी खबर
रहे देखते औरों के ऐब व हुनर,
पड़ी अपनी बुराइयों पर जो नज़र
तो निगाह में कोई बुरा न रहा।

जब अपने ऊपर दृष्टि पड़ती है तो कोई बुरा न रहा। लेकिन अपने उपर नज़र पड़ती नही। ये बात विचारणीय है कि कोई इन्सान ऐसा नहीं जो अपने चेहरे को देख ले। चेहरा सबसे करीब है लेकिन सबसे दूर। आँखे अपने को देख नहीं पातीं। दूसरे का चेहरा दिखाई देता है इसलिए आदमी की नज़र दूसरे के अवगुण (ऐब) पर पहले पड़ती है। इसीलिए कहा गया है कि "मोमिन, मोमिन का आइना है" यदि दूसरे के चेहरे को देखकर उसे अपना चेहरा समझा जाए तो बात बन जाए। लेकिन हम दूसरे के चेहरे पर अटक कर रह जाते हैं। अपने को देखते ही नहीं कि उसको आइना समझें। यानि अगर उसमें दाग नज़र आ रहा है तो वह दर्पण है, ये हमारा दाग है जो उसमें दिखाई दे रहा है। इसलिए आइना क्या करता है? यदि दर्पण सामने हो और हमारे दाग धब्बे दिखाई दे रहे हैं तो उसे धो लें। आइना सामने रखकर धोना पडेगा। जैसे अपने को संवारने के लिए, बाल ठीक करने के लिए, दाढ़ी ठीक करने के लिए, आइना रखते हैं कि नहीं रखते? यदि आइना न रखें तो मालूम हुवा कि इधर जियादा काट दिया उधर कम, हुलिया बिगड जाएगा। ख़ुद से करने लगेंगे तो यही होगा। इसलिए कहा गया है कि मोमिन मोमिन का आइना है और उसमें एक बात और है कि मोमिन (मुसलमान) को ऐसा पाक साफ होना चाहिये कि उसके अन्दर के दोष (ऐब) दूसरे को दिखाई दे। एक तात्पर्य यह भी है कि मोमिन को ऐसा होना चाहिये दूसरे उसमें अपना अवगुण व दोष देख लें। लेकिन हम दूसरे के ऐब को अपना ऐब समझें। ये नहीं कि उसके अवगुणों को देखकर ये समझे कि वह इतना बुरा हैं

हज़रत मौलाना मुहम्मद अहमद (रह0) को मैंने देखा कि वह फरमाते थे कि "गुनाह कोई और करे शर्मिन्दा मैं होता हुँ" उसको बुरा नहीं समझ रहे हैं बल्कि लज्जित हो रहे हैं। दूसरे के दोष देखकर अपने दोष (ऐब) याद आ जाएं तो समझो कि अब रास्ते पर लग गए और यदि दूसरे के ही ऐब देखते रहे तो समझ लो कि हम स्वयं पूरी तरह बीमार हैं, तो सुधार करेंगे क्या? जो ख़ुद बीमार हो तो दूसरे को उपचार विधि क्या बताएगा? पहले अपने आप का सुधार होना चाहिये। ये इतना बड़ा मर्ज हो गया है कि आज कल हर व्यक्ति सुधारक बना हुआ है और सदाचारी कोई होता है नहीं। अल्लाह ने आदेश दिया है कि नेक बन जाओ।

नोट : उपरोक्त लेख औरंगाबाद महाराष्ट्र, की सभा में दिया गया व्याख्यान है जिसे अब्दुल्लाह प्रतापगढ़ी ने टेपरिकार्डर से नकल किया है। जारी....

❑❑

किस्त 11

मुस्लिम समाज

– हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

– अनु0 मुहम्मद हसन अंसारी

दीनी व तालीमी काम की अहमियत और जरूरत

हिन्दुस्तान को आजादी मिलने पर मुसलमानों को अल्पसंख्यक होने की वजह से सख्त हालात का सामना था। यह हालात मुसलमानों के मजहबी अकीदे और उनकी इस्लामी पहचान के लिये एक तरह से चैलेंज बनने लगे थे। इन हालात में उम्मत के गैरतमन्द और इस्लामी पहचान को बरकरार रखने की सच्ची तड़प रखने वालों विद्वत्जनों ने एकत्र होकर संकल्प लिया कि मुसलमानों की नई नस्ल को जो इस नये आजाद होने वाले मुल्क में जहाँ के मुसलमान अल्प संख्यक हैं, देश के आम माहौल जो इस्लामी सोच व अकीदा के अनुकूल नहीं है, उससे बचाने के लिये, इस की प्रारम्भिक अवस्था ही में जरूरी कदम उठाना है और कोई बेहतर निजाम तय करना है। क्योंकि नई नस्ल किसी भी क़ौम की हो, किसी भी मुल्क की हो, अपने माँ–बाप के माहौल से निकल कर जब दूसरों से सीखने और असर लेने के मरहले में दाखिल होती है तो अपने अख़्लाक़ व किरदार और अकीदा व सोच पर उन का पूरा असर कबूल करती है। और इस तरह वह अपने मजहब व कलचर के लेहाज से अन्य धर्म व कलचर वालों से भिन्न होने के कारण वरसः में प्राप्त अख़्लाक व किरदार से महरूम (वंचित) हो जाती है। इन नकारात्मक प्रभावों से बचाने के लिये यदि प्रारम्भ ही में आवश्यक उपाय नहीं अपनाये गये तो यह नस्ल बड़ी होकर अपनी मिल्लत के तौर तरीक पर चलने वाली नहीं होगी।

अतएंव मिल्लत के दानिशवरों (बुद्धिजीवियों) का यह फर्ज बनता है कि नई नस्ल की प्राथमिक शिक्षा ही में इन बातों को बच्चों के जेहन में डालने की व्यवस्था करें। इस जरूरत को सामने रख कर दीनी तालीमी कौंसिल वजूद में आई थी। कौंसिल ने गत पचास साल में मुसलमान बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के ऐसे मकातिब (स्कूल) कायम किये जिन में शहरी ज़िन्दगी के विषयों के साथ दीनी और इस्लामी अकायद और दीन की बुनियादी बातें बच्चों के जेहनों में उतार दी जायें, और इसकी व्यवस्था ऐसी बनायी जो एक तरफ आर्थिक रूप से आत्म निर्भर (ख़ुदकफील) बनाने वाला और दूसरी तरफ मुल्क की सेकुलर व्यवस्था के शैक्षिक ढाँचे से दस्तूरी लेहाज से टकराव वाला भी न था। और यह इस लिये कि दस्तूरे हिन्द (भारतीय संविधान) के दायरे में रहने की पाबन्दी की बुनियाद पर इस को बहुसंख्यक या हुकूमत की तरफ से रूकावट पेश न आये। और इस बात का भी ध्यान रखा गया कि कौंसिल को इस बात का जायजः लेते रहना है कि मुल्क के सेकुलर दस्तूर के दायरे में रहते हुए हुकमते वक्त को भी इस बात की पाबन्दी करना है कि वह मुल्क के शहरियों के लिये ऐसा पाठयक्रम न अपनाये जिसमें बहुसंख्यक को बहुसंख्यक का दर्जा हासिल होने की बिना पर उस के मजहब के अकायद व रस्म की पाबन्दी आयद की जाये। लेहाजा दीनी तालीमी कौंसिल के जिम्मेदारों ने इस बात को भी अपने प्रोग्राम में रखा कि हुकूमत के स्कूलों मे जारी किये गये पाठयक्रम में मजहबी अकायद की कोई ऐसी बात न आये जिस से एक मजहब की रिआयत में दूसरे मजहब की खिलाफ वर्जी होती हो।

इस समय मिल्लत के हालात देखकर बेचैनी होती है। अपनी पहचान को वर्तमान परिस्थितियों

में बनाये रखना एक संगीन समस्या है। हमारे मिल्ली शऊर में कमी आई है। अवाम में गफलत और एहसास की कमी दिखाई पड़ती है, ऐसी हालत में जो भी प्रोग्राम मिल्लत की बेहतरी के लिये बनाये जायें वह मिल्लत की जरूरत को ज्यादा पूरा नहीं कर सकते। मुल्क के जो नकरात्मक हालात हैं उनके असरात मिल्लत पर जाहिर होना शुरू हो गये हैं। ऐसी सूरत में दीनी तालीमी कौंसिल का महत्व बढ़ जाता है। अवाम की तरफ से कौंसिल को वाँछित सहयोग और प्रोत्साहन नहीं मिलता देखकर अफसोस होता है। और आगे आने वाले खतरे का एहसास बढ़ जाता है।

पहले जब इस मुल्क में मुसलमानों को सम्मान प्राप्त था और उन का जमाना था तो बचपन से बच्चों के पालन पोषण और उनकी सही तरबियत पर बड़ों का ध्यान रहता था, इस तरह उसको मुनासिब तरबियत प्राप्त होती थी, घरों में और घरों से बाहर मस्जिदों में उस नई नस्ल को शुरू से ही सही जेहनी खूराक मिलनी शुरू हो जाती थी जिस के स्रोत घर के बड़े बूढ़े लोग होते थे, इसके साथ मस्जिदों के इमाम व मुअज्जिन हजरात से मदद ली जाती थी, यह सिलसिला आधुनिक हिन्दुस्तान में अब मौकूफ (रूकजाना) हो चुका है। और इस का कोई बदल बाक़ायदा कायम नहीं, अब नई नस्ल के सिर्फ वही बच्चे इन खतरों से बच पा रहे हैं जो दीनी मदरसों में भेजे जाते हैं लेकिन इनकी तादाद तीन चार प्रतिशत से अधिक नहीं, बाकी तादाद दीनी ऐतबार से बर्बाद हो रही है क्यों कि घरों में वह पहले जैसी व्यवस्था बाकी नहीं रही। और इसके बजाय बाजारों का विज्ञापन–संसार और प्रतिदिन अखबारों की तरफ से असावधान दिशा देने, फिर टीवी के प्रोग्राम जिन से हर समय साबक़ः पड़ता है, वह नई पीढ़ी को किस खतरानाक बदलाव की तरफ ले जा रहे हैं इस का अन्दाजा सब कर सकते हैं। ऐसी सूरत में अगर हम इन हालात को बदल नहीं सकते (क्योंकि यह मुल्क की कौमी ज़िन्दगी में इस प्रकार रच बस गये हैं जैसे पानी में रंग) तो कम से कम हम इसका कोई राहबर अपना सकते है और वह राहबर हमारी प्राथभिक शिक्षा के इस्लामी प्राइमरी मदरसे हैं जो दीनी तालीमी कौंसिल और इसी जैसे अवामी इदारों की सरबराही में अवामी वसायल (सार्वजनिक संसाधन) से चलाये जाते हैं।

मुसलमानों के लिये मजहब के सिलसिले में यह जानना और मानना जरूरी है कि उनका मजहब तौहीद का मजहब है जिस में ख़ुदा को एक मानना और अकेले उसी की बन्दगी करना जरूरी है। वह शिर्क की किसी किस्म को क़ूबुल नहीं करता, और यह कि इस्लाम मजहब परिपूर्ण हैं। ज़िन्दगी के तमाम मामलों में वह खैरख्वाहाना रहनुमाई करता है। उसके नबी (सल्ल0) अल्लाह की तरफ से इन्हीं तालीमात के लिये भेजे गये। उनकी ताबेदारी और उनके अहक़ाम पर अमल जरूरी करार दिया गया। इस्लाम में वह जानना और मानना भी जरूरी करार दिया गया कि इन्सान की मौजूदा ज़िन्दगी के बाद दूसरी ज़िन्दगी भी होगी जिस को आखिरत कहते हैं जहाँ इस दुनिया की जिन्दगी में किये गये अच्छे और बुरे कामों का बदला मिलेगा। इस्लाम कोई जबरदस्ती का मजहब नहीं है, वह किसी पर जबरदस्ती कर के अपने को मानने पर मजबूर करने को नहीं कहता। वह अच्छी बातों की तरफ बुलाता है, और सब इन्सानों के साथ चाहे गोरे हों या काले, अमीर हो या गरीब, सबके साथ के साथ बराबरी का मामला करने की शिक्षा देता है।

इस्लाम ने हमको जो शिक्षा दी हैं उनका जानना और मानना हर मुसलमान के लिये जरूरी है। अतः हमको इस मुल्क में जहाँ तरह–तरह के अकीदे और मजहब हैं, अपनी नई नस्ल के जेहनों को उनकी बाल्यावस्था से ही इस्लाम के सही अकीदः व अमल से वाकिफ करा देना जरूरी है

शेष पृष्ठ 19

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

- प्रस्तुति : फौजिया सिद्दीका

- इदारा

प्रश्न : शहीद किसे कहते हैं?

उत्तर : शहीद इस्लामी इसतिलाह में वह शख्स है जो अल्लाह की राह में मारा जाए मुखतलिफ हदीसी रिवायात के लिहाज से शहीद की बहुत सी किस्में हैं जैसे कोई शख्स ताऊन बीमारी में मरे वह भी शहीद है, जो मुसलमान किसी हादिसे में मरे या किसी तक्लीफ में मरे इन सब सूरतों में उसको शहादत का सवाब मिलेगा जो औरत बच्चे की पैदाइश में मरे उसे भी शहादत का सवाब मिलेगा लेकिन जिस शहीद के बारे में कुर्आन मजीद में आया है कि उनको मुर्दा मत कहो वह जिन्दा हैं लेकिन तुम उनकी जिन्दगी को समझ नहीं सकते, दूसरी जगह है कि वह अल्लाह की तरफ से खिलाए जाते हैं वह शहीद है जो इस्लामी जिहाद में मारे जाएं। पर यह बात याद रहे कि दहशतगर्दी हरगिज–हरगिज इस्लामी जिहाद नहीं है बल्कि दहशतगर्दी फसाद फिल अर्ज है और बड़ा गुनाह है। इस्लामी जिहाद की बहुत सी शर्तें हैं। जिनको उलमा से समझा जा सकता है, उसकी अहम शर्त यह है कि वह किसी अमीर की सरकर्दगी में हो और वह लड़ाई इस्लाम की हिफाजत के लिये हो। नीज़ वह अमीर इस्लाम के दुश्मनों से मुकाबले की ताकत रखता हो, और वह जिहाद का एलान करे, और मुजाहिदीन को तय्यार करे, मैदाने जंग में इस्लाम के दुश्मनों से मुकाबला हो, इस लड़ाई में मारे जाने वाला मुसलमान आला दर्जे का शहीद है।

जिस मुसलमान पर इस्लाम की दुश्मनी से कोई काफिर हमला करके उसकी जान ले वह भी ऊँचे दर्जे का शहीद है जैसे हज़रत उमर (रज़ि0) पर नमाज की हालत मे एक मजूसी ने हमला करके जख्मी कर दिया, उसी जख्म से आप का इन्तिकाल हो गया इस सूरत में भी आप ऊँचे दर्जे के शहीद हैं। या जिस मुसलमान पर किसी कलमा गो ने जुल्मन हमला कर के उसकी जान ले ली वह भी आला दर्जे का शहीद है, जैसे हज़रत उसमान (रज़ि0)। और वह कलमागो जालिम, इस्लाम की रू से जहन्नमी है। इस तरह के शहीदो में हज़रत अली (रज़ि0) भी हैं और उनका कातिल अब्दुर्रहमान जहन्नमी है।

हज़रत हुसैन रजियल्लाहु अन्हु और उनके साथ मारे जाने वाले सभी मुसलमान भी शहीद हैं। यह सही है कि कातिलाने हुसैन कल्मा गो थे मगर वह जालिम थे, हज़रत हुसैन (रज़ि0) सहाबी थे, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासे थे आला दर्जे के साहिबे ईमान थे यजीद की बैअत से अपने इजतिहाद से इन्कार किया था मगर वह यजीद से लड़ना न चाहते थे उनको तो कूफियों ने यज़ीदी फौज के सामने ला खड़ा किया। उन्होंने बार–बार उनसे कहा था कि उनका कत्ल यजीदी फोर्स के लिये किसी तरह रवा नहीं। उन्होंने जो तीन मुतालबात रखे थे कि मुझे हिजाज वापस जाने दो, या मुझे किसी सरहद की जानिब जाने दो या मुझे यजीद के पास जाने दो लेकिन यजीदी फोर्स ने एक न मानी और आपका घेरा तंग करके इताअत पर मजबूर किया, आपने उन जालिमों की इताअत से इन्कार किया और इतमामे हुज्जत के बाद मुकाबले पर आ गये। जालिमो ने आपको शहीद कर के ही छोड़ा, आप और आपके साथी सब शहीद हुए, और शहीद करने वाले अगर्चे कल्मागो थे मगर आला दर्जे के मुसलमानों को जुल्मन शहीद किया इसलिये वह कुर्आन की रू से जहन्नमी हुए वल्लाहु अअलम। ऐसे शुहदा मुमताज़ शुहदा में हैं जिनको किसी हादिसे या तक्लीफ की मौत पर शहादत का सवाब मिलेगा।

प्रश्न : ईदगाह में औरतों का जाना जायज है या नहीं? हनफ़ी मसलक के मुताबिक इसका जवाब दीजिए?

उत्तर : जहाँ तक मेरा मुताला

है कि हनफी मसलक में औरतों का ईदगाह जाना दुरुस्त नहीं है। मैं यहाँ हनफी फिक्ह की दो मुसतनद किताबों की इबारतें नकल कर रहा हूँ :–

"जवान औरतें किसी नमाज के लिए भी घर से नहीं निकलेंगी। रहीं बूढ़ी औरतें तो इमाम अबू हनीफा (रह0) ने कहा कि बूढ़ी औरतें ईदैन, इशा और फज्र की नमाज के लिए निकल सकती हैं, लेकिन वे जुमा, अस्र और मग़रिब की नमाज के लिए नहीं निकलेंगी और अबू यूसुफ (रह0) ने कहा कि बूढ़ी औरतें सभी नमाजों के लिए घर से निकल सकती हैं।" (फतावा क़ाज़ी ख़ान अली हामिश आलमगीर)

और रहीं औरतें तो क्या उन्हें इजाज़त है कि ईदैन की नमाज के लिए घर से निकलें? हनफी फ़कीहों का इस पर इत्तिफ़ाक है कि जवान औरतों को जुमा, ईदैन और किसी भी नमाज के लिए घर से निकलने की इजाजत नहीं है।

हदीसों के मुताले से मालूम होता है कि नबी (सल्ल0) ने औरतों को ईदगाह जाने का जो हुक्म दिया था, इसका मकसद यह न था कि वे ईदगाह जाकर नमाज अदा करें, यही वजह है कि आपने हायज़ा औरतों को भी ईदगाह जाने का हुक्म दिया था हालाँकि हायजा पर नमाज नहीं है।

यह बात इस तरह भी मालूम होती है कि एक तरफ तो आप (सल्ल0) ने हायजा तक को ईदगाह जाने का हुक्म दिया और दूसरी तरफ औरतों को जुमा की नमाज के लिए मस्जिद जाने से मना किया। हालाँकि जुमा की नमाज फ़र्ज़ है और ईदैन की नमाज वाजिब या सुन्नत। यही वजह है कि फकीह इस पर मुत्तफिक हैं कि औरतों पर न ईदैन की नमाज वाजिब है और न जुमा की फ़र्ज़।

हदीसों में हमें यह भी मिलता है कि हूजुर (सल्ल0) ने औरतों के लिए मस्जिद जाकर मर्दों की जमाअत के साथ नमाज अदा करने को पसन्द नहीं फरमाया है, बल्कि इसके बरअक्स उनके लिए घर में नमाज अदा करने बल्कि घर की किसी कोठरी में नमाज अदा करने को अफ़ज़ल और बेहतर करार दिया है।

फिर हम यह भी जानते हैं कि हुजूर (सल्ल0) ने औरतों को मस्जिद जाने की इजाजत दी भी है तो ज़ेब व ज़ीनत के साथ नहीं, बल्कि इस तरह कि वे मर्दों के लिए कशिश का कारण न बनें। इसके अलावा हमें यह भी मालूम है कि अहदे रिसालत के बाद औरतों ने नबी (सल्ल0) की लगायी हुई शर्तों की खिलाफवर्जी शुरू कर दी थी, यहाँ तक कि हज़रत आइशा को कहना पड़ा था कि अगर रसूलुल्लाह (सल्ल0) ये बातें देख लेते, जो अब औरतों ने पैदा कर दी हैं, तो इनको मस्जिदों में जाने से रोक देते।

मैं यहाँ पर चन्द हदीसों के तर्जुमे पेश करता हूँ– हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रजि0) की बीवी हज़रत ज़ैनब कहती हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने हम औरतों से फरमाया था कि "जब तुममें से कोई औरत मस्जिद जाए तो खुशबू न लगाये।" (मिश्कात, मुस्लिम के हवाले से)

हज़रत अबू हुरैरह की एक हदीस है : "मैंने अबुल कासिम (सल्ल0) को फरमाते हुए सुना कि जिस औरत ने मस्जिद जाने के लिए खुशबू लगायी हो, उसकी नमाज उस वक्त तक कुबूल नहीं होती, जब तक वह ऐसा गुस्ल न करे जैसा वह नापाकी के बाद करती हैं।"

(मिश्कात, अबू दाऊद के हवाले से)

हज़रत अबू मूसा से रिवायत है कि : "अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने फरमाया औरत जब खुशबू लगाकर मर्दों की किसी मजलिस से गुजरती है, तो वह ऐसी है और वैसी है यानी जानिया है।"

(मिश्कात, तिरमिजी, अबू दाऊद, नसई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर की एक हदीस से इस मसले की असल नौअियत सामने आती है। वे कहते हैं : "अल्लाह के रसूल ने फरमाया कि अपनी औरतों को नमाज के लिए मस्जिद जाने से मना न करो, लेकिन उनके घर (नमाज के लिए) उनके लिए बेहतर हैं।"

(मिश्कात, अबू दाऊद)

इस हदीस से मालूम हुआ कि इन शर्तों को पूरा करके भी, जो हुजूर (सल्ल0) ने मस्जिद जाने के लिए औरतों पर लगायी हैं उनके

लिए मस्जिद जाकर नमाज अदा करना बेहतर नहीं, बल्कि बेहतर यह है कि वे अपने घर ही में नमाज अदा करें।

तमाम हदीसें इस बात की. दलील हैं कि हनफी फकीहों ने बड़ी बसीरत के साथ यह फैसला किया है कि जिन शर्तों के साथ उनको इजाजत दी गयी थी वह आम तौर से नहीं पायी जातीं। इस लिए अब जवान औरतों को ईदगाह जाने या मस्जिदों में बाजमाअत नमाज में शिरकत के लिए जाने की इजाजत नहीं है।

(मौलाना अहमद उरूज कादरी)

('अहकाम व मसाइल' से)

❑❑

त्याग की भावना

कि — हुजूर! आपकी इनायत का शुक्रिया अदा करना मेरा नैतिक कर्तव्य है ये बाग जो आपने मुझे दिया आपकी सेवा में फिर वापस आपके ही नाम करता हुँ और आपकी आज्ञा से विदा होता हुँ।

हज़रत अब्दुल्लाह ने पूछा — क्यों?

जवाब मिला — मेरे अमल से आपके मन में मेरे लिए सम्मान पैदा हो गया है। ये बात कहीं मेरे अन्दर अहंकार न पैदा कर दे। अब मेरा यहाँ रहना उचित नहीं है। आपने मुझे आजाद किया है तो मैं यहाँ से चला। अल्लाह आपको ख़ुश रखे— और अपनी हिफाजत में रखे।

❑❑

मुस्लिम समाज

ताकि वह अपने सही रास्ते से भटकने से सुरक्षित रहें। हमारे दीनी मदरसों का सारा प्रयास यही है। जब प्रारम्भिक शिक्षा के बाद शिक्षा की राष्ट्रीय व्यवस्था में शामिल हो तो उसके अकीदे और दीन की बुनियाद सही कायम हो सके और वह अपने को मुस्लिम मिल्लत का व्यक्ति समझे और अपने बुनियादी मूल्यों से परिचित हो, इस में उसको धोखा खाने से और गैरों के विरोधी प्रभावों से सुरक्षित रहने का रास्ता मिल जाये।

दीनी तालीम की तरफ और अधिक ध्यान देने की जरूरत है। ज्यादा से ज्यादा इलाकों में मकतब कायम हों और उनके जरिये नई नस्ल के मन–मस्तिष्क में इस्लाम की बुनियादी बातें बैठा दी जाएं। ताकि कम से कम उनकी इस्लामी पहचान बाकी रहे, और वह अपनी इस कीमती पहचान से वंचित न हो जायें। सबको इधर ध्यान देने की जरूरत है कि हम इस मुल्क में अपने ईमान व इस्लाम की सलामती के साथ जीवन व्यतीत करें, और हमारा यह अकीदा और हमारी यह इस्लामी पहचान हमसे छीनी न जा सके। इसके लिये इस काम से दिलचस्पी बढ़ाने की और इसके लिये उचित कार्यकर्ताओं के आगे बढ़ने की और काम के संभालने के लिये सामने आने की जरूरत है।

जारी....

❑❑

हम कैसे पढ़ायें?

को जोड़ने का अभ्यास कराया जाये। बड़े बच्चों से खास–खास प्रश्नों के द्वारा पाठ की पुनरावृति कराई जा सकती है और इसके बाद कहा जा सकता है कि वह कुल पाठ का सारांश अपनी–अपनी कापियों पर लिख कर दिखायें।

प्रयोग

कुछ पाठ ऐसे होते हैं जिनमें बच्चों से प्रयोग कराये जाते हैं विशेषकर सामान्य विज्ञान के शिक्षण में इसके अनेक अवसर आते हैं। किसी चीज को समझने के लिये बच्चे प्रयोग करते हैं। और स्वयं परिणाम निकालते हैं। टीचर इस काम में सिर्फ उनका मार्गदर्शन करता है।

कुछ पाठ ऐसे भी हो सकते हैं जिनमें 'प्रस्तुतीकरण' के अनेक और सारे रूप मौजूद हों, जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है।

मात्र प्रस्तुतिकरण ही से टीचर का काम समाप्त नहीं हो जाता। नई मालूमात को पुख्ता करने के लिये जरूरी है कि इस जानकारी में और बच्चे के पूर्व–ज्ञान में सम्बन्ध पैदा किया जाये। यह काम चर्चा के द्वारा भली प्रकार किया जा संकता है, यहाँ चर्चा से मतलब अनौपचारिक बात चीत करना है।

जारी.....

❑❑

क़िस्त 30

हम कैसे पढ़ायें?

शिक्षक बन्धुओं के लिये

तामाजियत और तालीम

- डॉ0 सलामतुल्लाह

अनु0: एम0 हसन अंसारी

पाठों की किस्में

आम तौर से सबक तीन किस्म के होते हैं :

1. मालूमाती सबक जिन का मकसद नई जानकारी पहुँचाना होता है।

2. अभ्यास वाले पाठ जिनका उद्देश्य किसी सीखी हुई चीज का अभ्यास करना होता है।

3. रूचि वाले पाठ जिसका उद्देश्य चीजों के मूल्य का अन्दाजा कराना होता है।

मालूमाती सबक

प्रस्तावना (प्रथम सोपान)

पाठ के प्रथम सोपान को प्रस्तावना कहते हैं। इसके ज़रियः बच्चे की मानसिक थाली का जायजः इस तरह लिया जाता है कि वह नई विषय वस्तु को ग्रहण करने के लिये तैयार हो जाये। इस में कोई नई मालूमात नहीं होतीं। इसमें अक्सर पिछले सबक की मालूमात को दोहराते हैं। यहाँ केवल उन बातों को दोहराया जाता है जिनका सम्बन्ध नये सबक से सीधे हो। जो टीचर बिना प्रस्तावना के एक दम पाठ शुरू कर देता है, प्रायः मजबूर होकर पीछे लौटता है। इस से बचने के लिये पाठ प्रारम्भ करने से पहले समझ बूझ कर प्रस्तावना उठानी चाहिये। प्रस्तावाना में सारा काम बच्चों का होना चाहिये। टीचर संकेत और सवाल के ज़रियः उनके विचारों का मार्गदर्शन करता है।

प्रायः टीचर प्रस्तावना छोड़ने या उसे नाकाफी रखने की गल्ती कर बैठते हैं। ऐसा पाठ को जल्दी समाप्त करने की खातिर किया जाता है, लेकिन इस से पाठ का उद्देश्य मर जाता है।

उद्देश्य को स्पष्ट करना

नया पाठ बच्चों के लिये एक प्रकार की तलाश है अतः लक्ष्य को अच्छी तरह समझ लेना बहुत जरूरी है। कुछ टीचर पाठ के शुरू में उद्देश्य को स्पष्ट करना बुरा समझते हैं। वह मानते हैं कि जिज्ञासा पैदा करने से दिलचस्पी पैदा होती है। लेकिन याद रखना चाहिये कि वह दिलचस्पी जो इस तरह से पैदा की जाती है सबक को कामयाब बनाने में बहुत कम मदद देती है बल्कि कभी—कभी तो वह रूकावट पैदा करती है। बच्चों का हक़ है कि उन्हें वह मकसद मालूम हो जिसके लिये वह जमा हुए हैं "मैं जो कुछ कहूँ ध्यान से सुनो", या "अपनी किताब खोलो और अमुक पेज से पढ़ना शुरू करो", अथवा "अमुक प्रश्नों को अपनी कापियों में हल करो", जब टीचर कहता है तो बच्चों के आज्ञापालन का बेजा इस्तेमाल करता हैं आखिर बच्चे क्यों हमारी हर बात ध्यान से सुनें या हमारी इच्छानुसार काम करें? जब तक उन्हें उस उद्देश्य की जानकारी नहीं है जिसके लिये उन्हें वह पाठ पढ़ाया जा रहा है। मकसद साफ बताने से बहस मुबाहसे में समय नष्ट नहीं होता।

इसका तरीका

उद्देश्य को कभी एक ऐसे प्रश्न के रूप में स्पष्ट किया जाता है जिस का जवाब बच्चे नहीं दे सकते तब उनसे कहा जाता है कि अच्छा हम आज यही बात मालूम करेंगे। और कभी टीचर सीधे नये सबक का मकसद बयान कर देता है।

निर्देश

कुछ टीचर इस जोश में कि हर चीज सवालों के ज़रियः बच्चों से निकलवाई जाये उन स तरह—तरह के सवाल करते हैं और कोशिश करते हैं कि खींच तान कर किसी न किसी तरह इन उत्तरों में शीर्षक (टापिक) का नाम आ जाये, ऐसा करने में

यदि वह सफल हो गये तो उन्हें सन्तोष हो जाता है। मिसाल के तौर पर एक टीचर ने एक मर्तबः अपना सबक इस सवाल से शुरू किया "तुमने कल क्या खाया था"? इसके अनेक उत्तर मिले किन्तु किसी ने वह उत्तर नहीं दिया जो वाँछित था। आखिर तंग आकर टीचर ने गुस्से में कहा, "तुम ने आलू जरूर खायें होंगे", क्यों कि आलू ही उस पाठ का शीर्षक था। इस तरह की प्रस्तावना में समय नष्ट होने के साथ ध्यान भी बंट जाता हैं अगर किसी बच्चे ने उत्तर में "आलू" कह भी दिया होता तो उससे भी कोई फायदा न होता क्योंकि वास्तविक जिज्ञासा को इस उत्तर में कोई दखल नही हैं।

प्रस्तुतीकरण

इस सोपान में टीचर नयी विषय–वस्तु प्रस्तुत करता है। कुल विषय वस्तु को समुचित भागों में बाँट लिया जाता है और हर बात को उचित प्रश्नों के ज़रियः स्पष्ट किया जाता है। जब एक बच्चा सवाल का जवाब दे चुकता है, तो दूसरे बच्चे उसपर समालोचना करते हैं। कोई कमी होने पर उसे पूरा कर देते हैं। इस तरह बच्चों में अभिव्यक्ति शक्ति बढ़ती है और आत्मविश्वास बढ़ता हैं। प्रस्तुतीकरण में ज्ञात से अज्ञात की ओर चलना चाहिए। विषय वस्तु बच्चों की ग्राहय शक्ति के अनुसार रखी जाये। विषय वस्तु उतनी ही मात्रा में रखी जाये जिसे बच्चे पचा सकें। ओवर फीडिंग न हो जाये। टीचर का लक्ष्य पाठयक्रम पूरा करने के साथ बच्चों के ज्ञान को बढ़ाना और उनके व्यक्तित्व का विकास करना दोनों है। एक ही बात को बार–बार दोहराने या खींचतान कर पीरियड खत्म होने की प्रतीक्षा करने से बच्चों का भला नहीं होता।

निचली कक्षाओं में यह सोपान अधिकाँश मौखिक बात चीत पर आधरित होती है क्योंकि बच्चे पढ़ना जानने से पहले बात–चीत समझ सकते हैं। टीचर उचित प्रश्नों के ज़रियः इस बात का अन्दाजा लगा सकता है कि बच्चे बताई हुई बातों को किस हद तक समझे हैं। इस विधि की सफलता के लिये जरूरी है कि टीचर सादा और सरल भाषा में बयान करने की क्षमता रखता हो।

प्रश्न और उत्तर

प्रारम्भिक विद्यालयों में उपरोक्त विधि को "लेक्चर" कह कर बुरा बताया जाता हैं और यह कहा जाता है कि हर चीज प्रश्नों के द्वारा बच्चों से निकलवाना चाहिये। निःसन्देह टीचिंग में प्रश्नों का बड़ा महत्व है किन्तु प्रश्न कितने ही उचित हों उनके द्वारा कोई नई बात बच्चों के दिमाग में दाखिल नहीं की जा सकती। जैसे इतिहास के पाठ, कहानियाँ, अन्य देशों का वर्णन आदि ऐसे शीर्षक हैं जिनमें मात्र प्रश्नों पर भरोसा करना ठीक नहीं। इन विषयों को पढ़ाने में टीचर को बयान से काम लेना चाहिये।

बयान

जिस जगह स्पष्ट करने और विवेचना की जरूरत हो वहाँ उचित चित्रों, मानचित्रों आदि को सुस्पष्ट करने के उद्देश्य से प्रस्तुत किये जा सकते हैं, लेकिन जो बातें स्वतः स्पष्ट हों उनके लिए विवेचना फायदा के बजाए नुकसान करने वाली है। क्योंकि इस से बच्चों की कल्पना शक्ति के विकास की सम्भावना कम होती है।

लेकिन यह ठीक नहीं कि टीचर मात्र अपने "लेक्चर"से सन्तुष्ट हो जाये। बच्चों का सक्रिय सहयोग और प्रतिभाग जरूरी है। यह जरूरी है कि प्रत्येक सोपान के अन्त में यह सुनिश्चित किया जाता रहे कि बच्चे शिक्षण में सक्रिय भाग ले रहे हैं या नहीं। और मुनासिब सवालों के ज़रियः इस बात का यकीन कर लेना चाहिये कि बच्चे विषय–वस्तु को अच्छी तरह समझ गये हैं या नहीं। इसके लिये बेहतर है कि पाठ का सारॉश श्यामपट्ट पर लिख दिया जाये, और पाठ की सामप्ति पर पुनरावृति (दोहराना) का काम कर लिया जाये। याद रखें कि छोटे–छोटे बच्चों को किस्से कहानी पढ़ाने में यह तरीका अच्छा नहीं कि पाठ समाप्त होने पर कक्षा से छोटे– छोटे प्रश्न किये जायें। और बच्चे एक–एक कर के इसका जवाब दें। बल्कि इस के बजाये यह ज्यादा मुनासिब होगा कि हर बच्चे से अलग–अलग सबक के समस्त भागों

शेष पृष्ठ 19

त्याग की भावना

- नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर कहते हैं कि मैं एक बाग में था कि इतने में एक कुत्ता आया। जाने कब से भूका था। कोना–कोना सूँघता फिर रहा था। खाने की कोई चीज ढूँढ़ रहा था। बाग की रखवाली एक गुलाम के जिम्मे थी। वह दास था तो काला कलूटा हब्शी, लेकिन उसका दिल आइने की तरह साफ था। ईमान के नूर ने उसकी भावना को और भी स्वच्छ सुन्दर बना दिया था। उसने देखा कुत्ता भूखा है और बहुत भूखा है तो स्वयं भी विचलित हो उठा।

इतने मे गुलाम के पास रोटी आई। कुत्ता बूँ सूँघते हुए दास के पास आ खड़ा हुआ। गुलाम ने काम छोड़ा एक रोटी कुत्ते के आगे डाल दी, कुत्ता देखते–देखते रोटी चट कर गया। उसकी भूख थी कि मिटती न थी। इस लिए आशा भरी नैनों से दास की ओर देखता वहीं खड़ा रहा। गुलाम समझ गया कि क्या माजरा है। उसने एक और रोटी कुत्ते के आगे डाल दी। वह भूखा दूसरी रोटी खा कर भी वहीं डटा रहा। गुलाम ने तीसरी रोटी भी दे दी। जबकि उसके पास तीन ही रोटियाँ थीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर कहते हैं, मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसने अपने लिए कुछ भी न रखा। मैं धीरे से उसके पास गया और उससे पूछा कि तुम्हारे पास रोज कितनी रोटियाँ आती हैं? जवाब मिला तीन!

मैंने पूछा ये बताओ तुमने तीनों रोटियाँ कुत्ते को क्यों दे दीं? गुलाम ने कहा जनाब! यहाँ कोई आबादी तो है नहीं, ये न जाने कहाँ से आया? आप मेरी माने तो उसे यहाँ कुछ भी न मिलेगा। मुझे अच्छा नहीं लगा कि वह भूखा रहे और पास से मायूस जाए। तीनों रोटी खाकर वह अब सैर हो चुका है, क्या आप देखते नहीं कि उसकी हालत बदल गई है?

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा ये सही है कि उसका पेट खूब भर गया है। लेकिन तुमने अपने लिए तो कुछ भी नहीं छोड़ा। क्या तुम भूखे रहोगे?

जवाब मिला हज़रत! मैं एक दिन भूखे रहुँगा तो क्या फर्क पड़ता है?

इस्लाम का आदेश है कि जानवर भूखा हो तो उसे खिलाया जाए। प्यासा हो तो पिलाया जाए। अल्लाह ने हमें अपनी सृष्टि में सर्वोत्तम और सुन्दर बनाया है तो इन्सानियत का तकाजा है कि हम बेजुबान जानवरों का ध्यान रखें। पालतू जानवरों की देखभाल की तो और भी अधिक जिम्मेदारी हम पर है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर बड़े दानी बुजुर्ग थे। गुलाम की इस भावना ने उनके दिल में जगह बना ली। उन्होंने सोचा ये गुलाम मन का धनी है, ये सोचते–सोचते बगीचे से निकले और बस्ती में जा पहुँचे। लोगों से पूछा वह बाग किसका है? लोगों से उसके मालिक का नाम–पता मिला। हज़रत अब्दुल्लाह तुरन्त उस व्यक्ति के पास पहुँचे। बाग का सौदा किया, गुलाम को भी खरीद लिया और फिर सीधे बागीचे में पहुँचे। गुलाम वहाँ मौजूद था, उससे कहा— ये बाग मैंने खरीद लिया, गुलाम ने कहा मुबारक हो! कहा मैंने तेरा भी सौदा कर लिया है जवाब मिला— बड़ी खुशी की बात है आपकी सेवा भी दिलो जान से करूंगा।

उन्होंने कहा— मैं तुझे आजाद करता हुँ, जवाब मिला अल्लाह का शुक्र है और आपकी इनायत!

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा .... तूने मेरी पूरी बात तो सुनी ही न ही!

हब्शी गुलाम ने कहा— मेरे मालिक सुनाइये मैं कान लगा के सुन रहा हुँ।

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा ....मेरे प्रिय! ये बाग मैंने तेरे नाम कर दिया।

मगर गुलाम भी अल्लाह वाला था। उसने निवेदन किया

शेष पृष्ठ 22

किस्त - 6

इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से?

- अ़ल्लामा सै0 सुलेमान नदवी (रह़0)

ख़ुदा का कुर्आन द्वारा इस्लाम फैलाने का आदेश

पवित्र कुर्आन इस्लाम के दावा और दलील दोनों का संग्रह है और यही उसके धर्म का पवित्र ग्रन्थ है। स्वयं हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) और दूसरे प्रचारक सहाबा (रज़ि0) भी अपने उपदेशों में केवल कुर्आन पढ़कर सुनाते और जहाँ भी उनको इसका अवसर मिल जाता वहाँ उसका प्रभाव अपना काम कर जाता था। इसका आदेश स्वयं कुर्आन ने दिया है किन्तु इस जिहाद का हथियार लोहे की तलवार नहीं बल्कि कुर्आन की तलवार थी जिसके वार की रोक–थाम ढाल से सम्भव न थी। अल्लाह ने अपने सन्देष्टा (रसूल) को उसी तलवार से जिहाद करने का आदेश दिया "तो ऐ सन्देष्टा! इन्कारियों का कहा न मान और इस कुर्आन से उनके साथ बड़े जोर से जिहाद कर" (सूरः फुरकान 5)। इस ईश्वरीय सन्देश (कलामे इलाही) का धरती पर उतरने का कारण यही था कि वह अल्लाह के भटके हुए बन्दों को उनका वादा याद दिलाए "तो ऐ सन्देष्टा! उनको जो मेरी धमकी से डरते हों कुर्आन के माध्यम से याद दिलाओ"

(सूरः काफ 3)।

इस्लाम के प्रसार का प्राकृतिक क्रम

अरब में केवल तीन समुदाय थे जिनका इस्लाम लाना मानो समस्त अरब महाद्वीप का इस्लाम लाना था, अर्थात् बहुदेववादी, यहूदी और इसाई। अरब अनेकेश्वरवादियों का मुख्यालय काबा था और उनके मजहबी पेशवा कुरैश थे। यहूदियों का गढ़ मदीना और खैबर था। इसाई और अग्नि उपासक (मजूसी) शाम (सीरिया) और यमन के आस–पास क्षेत्रों में फैले हुए थे। इस आधार की दृष्टि से इस्लाम के प्रसार का प्राकृतिक क्रम ये था कि कुरैश और बहुदेवादियों को पहले एकेश्वरवाद का निमंत्रण दिया जाए, फिर यहूद को इस्लाम का आज्ञाकारी बनाया जाए, उसके बाद इसाई और अग्नि उपासको को निमंत्रण दिया जाए। अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी क्रमानुसार प्रचार–प्रसार किया।

कबीलों का इस्लाम लाना

कबीलः मुज़ैना : ये एक बहुत बड़ा कबीला था जिसका वंश मिस्र तक पहुँचकर कुरैश के खानदान से मिल जाता है। नोमान बिन मुकरन (रज़ि0) मशहूर सहाबी जो मक्का विजय के समय कबील मुजैना के झंडाबरदार थे, इसी कबीले के थे। 5 हिज्री में इस कबीले के चार सौ

संकलन- नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

लोग कबीले के दूत बनकर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।

कबीलः दौसः

दौस अरब का एक मशहूर कबीलः था। इस कबीले के प्रसिद्ध कवि और सरदार तुफैल बिन अम्र (रज़ि0) थे। वह देश त्याग (हिज़रत) से पहले मक्का गए। कुरैश ने उनको रोका कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास न जाएं कि संयोग से एक बार हरम में गए तो पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) नमाज पढ़ रहे थे। कुर्आन सुनकर प्रभावित हुए। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की सेवा में उपस्थित होकर प्रार्थना की कि आप मुझको इस्लाम की वास्तविक्ता बताएं। आप (सल्ल0) ने इस्लाम की दीक्षा दी और कुर्आन की आयतें सुनाईं। वह अतिशुद्ध हृदयता से इस्लाम ले आए। वतन जाकर लोगों को इस्लाम का निमंत्रण दिया किन्तु उनके कबीले में व्याभिचार का अत्यधिक चलन था। लोग समझे कि इस्लाम लाने के बाद इस अन्धी आजादी से हाथ धो बैठेंगे। हज़रत तुफैल (रज़ि0) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

सामने दुखड़ा सुनाया। आप (सल्ल0) ने दुआ फरमाई कि "ऐ ख़ुदा! दौस को पथ प्रदर्शन (हिदायत) दे" फिर तुफैल (रज़ि0) से कहा कि वहाँ जाकर नम्रता से लोगों को इस्लाम का निमंत्रण दो। अतः लोगों ने उनकी प्रेरणा से इस्लाम धर्म स्वीकार किया और अस्सी खानदान के सभी लोग देश त्याग कर मदीना चले आए जिसमें प्रसिद्ध अबु हुरैरः (रज़ि0) भी थे। (असाबह जादुल्मआद और इब्ने सऊद जुज व वफूद।)

कबीलः बनूहारिस बिन कअ़ब

ये नज्रान का अति सम्मानित खानदान था। हज़रत खालिद (रज़ि0) को उनके पास इस्लाम के प्रसार–पचार हेतु भेजा गया। ये लोग उनके निमंत्रण पर अति शुद्ध हृदयता से इस्लाम लाए। वह अधिकतर युद्ध में अरबी कबीलों पर भारी पड़ते थे। आप (सल्ल0) ने पूछा कि तुम्हारे प्रभुत्व के क्या कारण थे। बोले हम सदैव एकजुट होकर लड़ते और किसी पर अत्याचार नहीं करते थे। (असाबह व जादुल्मआद)

कबीलः गेफार

हज़रत अबूजर (रज़ि0) जिनका वर्णन पहले हो चुका, मक्का से जब वापस लौटे और अपने कबीले को इस्लाम का निमंत्रण दिया तो आधा कबीलः उसी समय मुसलमान हो गया। शेष ने कहा कि हम उस समय इस्लाम स्वीकार करेंगे जब आप (सल्ल0) मदीना आ जाएं। अतः आप (सल्ल0) मदीना आए तो शेष आधा कबीलः भी मुसलमान हो गया।

कबीलः औस व खजरज

हज के मौसम में अरब के अधिकतर कबीलों का जमावड़ा होता था। आप (सल्ल0) इस अवसर पर प्रत्येक कबीले के निवास स्थल पर जाते और इस्लाम का निमंत्रण देते। अतः मदीना के औस व खजरज कबीले के अधिकतर समूह ने उसी अवधि में इस्लाम स्वीकार किया।

कबीलः जुहैनः

कबीलः जुहैनः भी उन्ही कबीलों के आसपास स्थित था। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने उन्हें इस्लाम का निमंत्रण दिया तो वह तुरन्त एक हजार का समूह लेकर मदीना आए और मुसलमान हो गए।

यमन में इस्लाम का विस्तार

अरब देश में यमन समस्त राज्यों में अत्यधिक प्राचीन व व्यापारिक मुख्यालय रहा है। सबा और हमीर का भव्य शासन यहीं स्थापित था। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के जन्म से लगभग पच्चास वर्ष पहले 525 ई0 में ईथोपियाई (हब्शी) इसाईयों ने यमन पर प्रभुत्व जमा लिया था। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के जन्म के कुछ वर्षों बाद ही ईरानी यहाँ के मालिक बन बैठे। यमन में इस्लाम की किरणें बहुत पहले पहुँच चुकी थीं। दौस कबीलः यमन निवासी था जो मुसलमान बन गया। यमन का एक अन्य मशहूर कबीलः अश्अर था जो हब्शा (इथोपिया) जाने वाले देश त्यागियों से दीक्षा प्राप्त करके मुसलमान बना।

कबीलः हम्दान

हम्दान यमन का सबसे बड़ा और रसूखदार खानदान था। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके बीच धार्मिक प्रचार–प्रसार के लिये हज़रत खालिद (रज़ि0) को भेजा। हज़रत खालिद (रज़ि0) छः महीने तक उनको इस्लाम का निमंत्रण देते रहे किन्तु उन लोगो ने स्वीकार न किया। अतः आप (सल्ल0) ने हज़रत खालिद (रज़ि0) को बुला लिया और हज़रत अली (रज़ि0) को भेजा। हज़रत अली (रज़ि0) ने उन लोगों को इक्ट्ठा करे हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) का पवित्र पत्र पढ़कर सुनाया जिसके प्रभाव से सम्पुर्ण कबीलः मुसलमान हो गया। (जरकानी बसनद सहीह अज बैहकी)

नज्रान वासियों का इस्लाम लाना

यमन के पास ही नज्रान है। नज्रान अरब में इसाईयों का महत्वपुर्ण मुख्यालय था। इसाईयों के अतिरिक्त नज्रान में बहुदेववादियों की भी कुछ आबादी थी उनमें एक कबीलः बनू हारिस इब्ने जियाद था जो मदान नामक बुत (मुर्ति) का उपासक था। इसलिए अब्दुलमदान के नाम से प्रसिद्ध था हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने हज़रत खालिद बिन वलीद (रज़ि0) को इस्लाम के प्रचार–प्रसार हेतु भेजा।

शेष पृष्ठ 35

बीच का रास्ता अपनायें सुन्नतों पर चलें

- हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

- अनु0 : एम0 हसन अंसारी

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने हर काम में बीच का रास्ता (ऐतदाल) अपनाने को पसन्द फ़रमाया है। आपने फ़रमाया 'मामलात में बेहतर वह है जो दरमियानी है, इस पर आप (सल्ल0) ने अनेक अवसरों पर स्वयं अपने व्यवहार से बताया और ध्यान दिलाया। आपके तीन सहाबी बड़े ईमानी जज़बः के साथ आपके पास आये, एक ने कहा कि रात–रात भर इबादत किया करूंगा, दूसरे ने कहा कि मैं निरन्तर रोजा रखूँगा, तीसरे ने कहा मैं कभी शादी न करूंगा। आप (सल्ल0) ने मना फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि मैं तुम से ज्यादा मुत्तक़ी और अल्लाह से डरने वाला हूँ और रात को इबादत करता हूँ और सोता भी हूँ और रोजे भी रखता हूँ, और रोजे से खाली दिन भी छोड़ता हूँ और शादी भी करता हूँ, जो मेरे तरीके पर नहीं वह हममें नहीं। यह था वह ऐतदाल और दरमियानी रास्ता जिस पर हुजूर (सल्ल0) ने उम्मत को डाला था और उस की तरबियत (दीक्षा) पूरी तरह कर दी थी कि अपनी दुनियावी जिन्दगी की फिक्र आवश्यक्तानुसार रखो और अपने दीन के हक़ को पूरी तरह अदा करो। आप (सल्ल0) ने फ़रमाया दीन आसान है। इस पर पूरी तरह अमल करना आसान है, दीन पर पूरा अमल करने से बरकत होती है और अल्लाह की नुसरत (मदद) के वायदे पूरे होते हैं। उम्मत के लिये इस में आसानी है और यही उसके लिये भलाई और कामयाबी की राह है। हुजूर (सल्ल0) ने एक सहाबी से फ़रमाया कि सज्दों से अर्थात् परवरदिगार की इबादत करने से मेरी मदद करो अर्थात् मेरी दुआ को सशक्त करो। एक हदीस में फ़रमाया, "ऐसा भी व्यक्ति लाया जायेगा जिसने खूब इबादत की होगी लेकिन लोगों की दिल आजारी (दुखी करना) की होगी, किसी को मारा होगा, किसी पर इल्जाम लगाया होगा, जब उसका हिसाब होगा तो जिसको उसने दुख पहुँचाया होगा उसको उसकी नेकियाँ दे दी जायेंगी, यहाँ तक कि उसका दामन उसकी नेकियों से खाली हो जायेगा, और उसको आग में जाना पड़ेगा। हमको हुजूर (सल्ल0) से सच्ची मुहब्बत का सबूत देना चाहिये, और सुन्नत का अनुकरण करना चाहिये।

सुन्नत की पैरवी का तकाजा यह है कि आप (सल्ल0) की ख़ुशी का काम किया जाये और नाख़ुशी से बचा जाये। आप के आदेशों का पालन किया जाए और जीवन को इस पैमाने पर ढाला जाये जो आप (सल्ल0) के पवित्र जीवन की दिन चर्या से और सुख–दुख में आपकी जीवन शैली से, इबादत व मामलात में आपकी सुन्नत से बनता है। आपसे सच्ची मुहब्बत का यही पैमाना है कि देखा जाये कि हमारी ज़िन्दगी में आप के तरीके व सुन्नत की पैरवी कहाँ तक है। दावा करना आसान है। आदमी जिस तरह अपनी बहुत सी इच्छाओं पर पैसे खर्च कर देता है आप (सल्ल0) से मुहब्बत के दावे और दिखावे पर भी खर्च कर देता है। रौशनी जलसा जुलूस भी आसान काम है। लेकिन जिसमें जी लगता हो और मालूम हो जाये कि यह आप (सल्ल0) की पसन्द की बात नहीं। आपका यह तरीकः नहीं। फिर उसको आदमी छोड़ दे और उसके स्वाद से अपने को बचाये। यही वह मुश्किल काम है जो हमारी ज़िन्दगी से निकलता जा रहा है। और जो सुन्नत है जिससे अल्लाह के रसूल ख़ुश होंगे उसको अपनाये चाहे इसमें कोई मजा न हो, कोई दिखावा न हो।

हुजूर (सल्ल0) की ख़ुशनूदी आपके आदेशों पर अमल कर के दिखाने से और आपकी सुन्नत की पैरवी से होगी। हम देखें कि आप (सल्ल0) ख़ुशी के मौकों पर क्या करते थे। अपने परवरदिगार की

इबादत और उसके आदेशों का पालन कैसे करते थे, दुख के समय क्या करते थे, बीवियों से कैसे पेश आते थे, बच्चों के साथ क्या सुलूक था, साथियों का कैसे ख़्याल करते थे, पड़ोसियों के साथ क्या मामला था, कैसी रहमदिली थी, कैसा अख़लाक था। कुर्आन कहता है :

अनुवाद : "तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल में अच्छा नमूना है, यह उस व्यक्ति के लिये जो अल्लाह से उम्मीद कायम करता है, और आखिरत में उम्मीद करता है और उसने अल्लाह को बहुत याद किया है।"

अल्लाह के रसूल (सल्ल0) से मुहब्बत और इताअत (आज्ञापालन) व आमाल व अख़लाक को अपने जीवन के लिये नमूना बनाना ही अल्लाह से मुहब्बत और मकबूलियत का ज़रियः करार दिया गया है। इसलिये हम मुसलमानों को अपनी–अपनी ज़िन्दगी का जायजः लेते रहना चाहिये कि हम अल्लाह के रसूल (सल्ल0) से वास्तव में मुहब्बत करते हैं या हमको शैतान धोखा दे रहा है। और हम सब इन्सानों को हमारे परवरदिगार ने हुक्म दिया है कि हम उन महान रसूल (सल्ल0) की पैरवी करें जो तमाम जहानों के लिये रहमत बन कर आये। इस में हमारी कामयाबी और नजात है।

अल्लाह के रसूल (सल्ल0) की एक सारगर्भित नसीहत हज़रत अरबाज बिन सारियः से रिवायत है कि आप (सल्ल0) ने हमें अत्यन्त प्रभावशाली प्रवचन दिया कि हमारे दिल डर गये और हमारी आँखों से आँसू बहने लगे, तो हमने निवेदन किया या रसूलल्लाह! यह तो मानों अन्तिम नसीहत मालूम होती है अतएवं हमें कुछ और नसीहत फ़रमाइये। आपने फ़रमाया, "मैं तुम्हें अल्लाह से डरने और अमीर (अगुआ) की बात सुनने और उसपर अमल करने की वसीयत करता हूँ। यद्यपि तुम पर कोई हब्शी गुलाम मुकर्रर किया जाये। (याद रखो) तुममें से जो मेरे बाद ज़िन्दा रहेगा वह बहुत विरोध देखेगा, ऐसी हालत में तुम पर लाजिम है कि मेरी सुन्नत और मेरे मार्गदर्शित चारों ख़लीफा के तरीके को लाजिम पकड़े रहना, उनको दांतों से मजबूत पकड़े रहना, और दीन में नये–नये काम (बिदआत) और ईजाद करने से बचना, इसलिए कि हर नई बात बिदअत और हर बिदअत गुमराही है।"

इस हदीस को देखिये कि आप (सल्ल0) ने कितना प्रभावशाली प्रवचन दिया कि लोग रो पड़े और दिल काँप उठे। हदीस में 'वजलत' शब्द आया है 'वजल' उस खौफ (भय) को कहते हैं जो दिल में लर्जः पैदा कर दे। खौफ की कई किस्में होती हैं अरबी में इसके लिये कई शब्द हैं, 'ख़ौफ़', 'हज़र', 'ज़अर', 'वजल' और 'ख़शीयत' भी। इन सब में थोड़ा अन्तर है और इनके प्रयोग के अवसर भी अलग–अलग हैं कि किस हाल में कौन सा शब्द अधिक उपयुक्त है। आम खौफ को ख़ौफ कहते हैं लेकिन जब किसी चीज को देख कर अचानक ख़ौफ आ जाये तो उसको 'ज़अर' कहते हैं। ख़शीयत उस डर को कहते हैं जो दिल में सम्मान की भावना के साथ हो। वजल उस खौफ को कहते हैं कि जसमें आदमी लर्ज जाये। सहाबः का ईमान बढ़ा हुआ था कि जब आप (सल्ल0) से जन्नत और जहन्नम की बातें सुनते थे तो काँप (लर्ज़) जाते थे। उनका ईमान इतना पक्का था कि जन्नत का जिक्र होता था तो गोया जन्नत उनको नज़र आ रही है और दोजख का जिक्र आता था तो मानो दोजख (नर्क) नज़र आ रही है। आग लपकती हुई नज़र आ रही है और ऐसा मालूम होता था कि वह आग हमारी तरफ बढ़ रही है और कहीं हमें छू न ले। यह हाल सहाबः का होता था। इस हाल के बाद क्या उनका दिल लर्ज नहीं जायेगा। आप सो रहे हों और आग लग गई, अचानक आप ने देखा कि वह आपकी तरफ बढ़ रही है और भागने का कोई रास्ता न हो तो आप का दिल लर्ज जायेगा, मालूम होगा कि मौत सामने है।

यह कैफियत सहाबः की हो जाती थी, इस लिये कि उनका ईमान पुख्तः था। आप (सल्ल0) की बात सुनकर सहाबः लर्ज गये और आँखों से आँसू बहने लगे। और सहाबः बोल उठे ऐ अल्लाह के रसूल! आपने ऐसी नसीहत फ़रमाई जैसे कि आप अन्तिम बात कह रहे हों

और जिसके बाद कुछ कहना नहीं। फिर जब सहाबः ने कहा, 'या रसूलल्लाह! कुछ नसीहत कीजिये', तो आपने फ़रमाया, "मैं तुमको नसीहत करता हुँ, निर्देश देता हूँ कि दिल में ख़ुदा का डर पैदा करो और बात सुना करो और माना करो जिस प्रकार वह व्यक्ति करता है जो किसी सक्षम स्वामी का दास हो।

इस हदीस में इस जमाने के लिये खास तौर से बहुत ही रौशनी है। इस जमाने में स्वार्थ, आपसी सम्बन्धों की ख़राबी, एक दूसरे से खींचतान लड़ाई, और एक दूसरे का विरोध मुसलमानों में आम बात हो गयी है। लीडर लीडर से लड़ रहे हैं, प्रवचन कर्ता व उलमा तक आपस में लड़ रहे हैं। आप (सल्ल0) ने जो फ़रमाया है वह इसी लिये कि आपको अल्लाह की तरफ से यह बतला दिया गया था कि उम्मत पर ऐसे दौर आयेंगे, और यह बात इसी जमाने में नहीं बल्कि इससे पहले से होती रही हैं तो आप (सल्ल0) की तरफ से यह बात बतला दी गई थी कि उम्मत इन हालात से गुज़रेगी। इस लिये आपने इससे खबरदार किया कि देखो! ऐसे हालात पेश आ सकते हैं, इसमें तुमको क्या करना चाहिए।

आप (सल्ल0) ने फ़रमाया कि अल्लाह से डरो और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा, जिसको वास्तव में डरना कहते हैं जैसा कि सहाबः डरते थे तो इस तरह की चीजों में नहीं पड़ेगा। मिसाल के तौर पर आग से आप डर रहे हैं, ख़ुदा न करे, आग लग गई। आप आग के सामने खड़े हैं उसी समय आप का विरोधी भी पहुँच गया है तो क्या ऐसी स्थिति में आप अपने विरोधी से दुश्मनी करेंगे? नहीं करेंगे। बल्कि दोनों मिलकर बचने की कोशिश करेंगे और उस समय दोनों दोस्त हो जायेंगे। दोनों एक दूसरे को सहयोग देंगे कि भाई आग लग गई है इसको बुझायें। उस समय हम अपने विरोध नहीं देखेंगे। उस समय हम दोनों मिल जायेंगे।

सही मोमिन (ट्रब्लीवर) अल्लाह के ग़ज़ब व नाराजगी से इसी तरह डरता है, और उसके अजाब से डरता है, उसकी पकड़ से डरता है और अल्लाह से इस तरह डरने का कारण यह बनता है कि अल्लाह ने कहा कि कयामत के दिन हम तुम्हारा हिसाब लेंगे। और तुम्हारी करनी के अनुसार बदला और सजा देंगे। अगर बुरे आमाल हैं तो जहन्नम और अगर अच्छे आमाल हैं तो जन्नत देंगे। इस पर पूरा–पूरा मामला होगा। वहाँ रिआयत नहीं। हाँ, अगर बाद में अल्लाह रहम फ़रमा दे तो उसकी अनुकम्पा है। कोई उसे रोक नहीं सकता। तो जब हमको इस पर वास्तव में यक़ीन होगा और ख़ुदा से वास्तव में डर होगा तो हमे बेहद फिक्र इसकी होगी कि अल्लाह पाक हमसे नाराज न हो। जब अल्लाह की रजामन्दी या नाराजगी की फिक्र होगी तो यह सब चीजें छूट जायेंगी कि फ़लाँ ने ऐसा कर दिया, फ़लाँ ने ऐसा कहा। मोमिन सोचता है कि फ़लाँ ने ऐसा वैसा कर दिया तो कितना नुकसान होगा, इस से ज्यादा नुकसान तो इसमें है कि आदमी अपनी करनी के कारण जहन्म (नर्क) में पहुँच जाये। हमारी दुनिया कितनी है और क्या महत्व रखती है वह अगर बर्बाद हो जाये तो कितना नुकसान है। अल्लाह से ड़रने वाला यह देखता है कि हमारी दुनिया बर्बाद हो जाये लेकिन हमारी आखिरत संवर जाये जहाँ हमेशा हमेश की ज़िन्दगी गुजारनी है। सहाबः के दिल की कैफियत यही बन गयी थी। जब उनको जहन्नम से डराया जाता था तो वह वास्तव में डरते थे और लर्ज जाते थे और आँसू जारी हो जाते थे और उन बातों में पड़ने या करने से दूर भागते थे जिनके करने से अल्लाह नाराज होता है।

कुर्आन कहता है, 'अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है।' और ऐसा डर वास्तव में पैदा होता है। हमारे हुजूर (सल्ल0) ने तक़वा (भय, खौफ) अपनाने के निर्देश के बाद फ़रमाया, 'अमीर (अगुआ) की बात सुनो और मानो, और जब मोमिन आप (सल्ल0) की बात को खूब मानता होगा तो यह हुक्म भी मानेगा और सब लोग अमीर की बाते मानने लगें तो झगड़ा खत्म हो जायेगा और गलत काम भी खत्म हो जायेगा। आपने फ़रमाया कि बाद

में जो ज़िन्दा रहेंगे जब कि ईमान की कमजोरी आ जाने पर विरोध प्रभावी होने लगेंगे तो लोग बड़ा विरोध देखेंगे।। एक दूसरे का विरोध करने वाले और नफरत करने वाले लोग होने लगेंगे। ऐसे समय में तुमको वसीयत करता हूँ कि मेरा तरीका और चारो ख़लीफा की राह अपनाओ और इस पर नज़र रखो कि मैंने क्या किया और ऐसे अवसर पर सहाबः ने क्या किया, खास तौर पर चारों खलीफा को देखो।

सुन्नत का अर्थ है तरीका–ए–अमल और अलसुन्नः का मतलब है अल्लाह के रसूल (सल्ल0) की सुन्नत। तो आपका यह कहना कि मेरी सुन्नत पर अमल और चारों खलीफा की सुन्नत पर अमल करो अर्थात् मेरे तरीके को देखो और उसको अपनाओ और सहाबः के तरीके को देखो और उसको अपनाओ और चारों खलीफा के तरीके को सामने रखोगे तो अपसी मतभेद, खींचतान और मुसीबत व आफत से बच जाओगे और फ़रमाया कि उसको दांतों से पकड़ो।

हुजूर (सल्ल0) ने फ़रमाया कि मेरी सुन्नत और सहाबः की सुन्नत को मजबूती से पकड़ लो। अगर ऐसा करोगे तो खतरे से बच जाओगे। और दीन के मामलें में नई–नई बातें ईजाद हों तो उनसे बचों अर्थात् अपने को बचाओ और बचो। लोग अपने फायदे के लिये मात्र अनुमानों से दीन के अन्दर नई बातें करते रहते हैं। इन से बचो और यह दीन के मामले में है, दुनिया के मामले में नहीं। दुनिया के मामले में आदमी को इख्तियार दिया गया है कि वह अपनी पसन्द के अनुसार काम करे लेकिन दीन के मामले में जहाँ अल्लाह की रजा का मामला होता है उसमें अगर कोई नई बात ईजाद की जाती है जो हुजूर (सल्ल0) ने हमें नहीं बताई तो वह नई कर दी गई है। नये–नये अपनाये गये मामलों से बचो जिनको लोग दीन बताते हैं हालाँकि वह दीन नहीं है जिसको अल्लाह और उसके रसूल ने बताया और कहा या किया है या सहाबः ने कहा और किया है। इसके अलावा जो नई चीज इख्तियार की जायेगी वह दीन नहीं बल्कि बिदअत है बिदअत का मतलब दीन में नई बात ईजाद करना है और दीन के अन्दर नई बात का ईजाद करना किसी का हक़ नहीं क्यों कि दीन मुकम्मल कर दिया गया और ऐलान कर दिया गया। "मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल (परिपूर्ण) कर दिया" (कुर्आन)। दीन मुकम्मल हो गया, अब कोई नई बात दीन में दाखिल नहीं होगी।

हुजूर (सल्ल0) ने फ़रमाया हर नई बात और नई ईजाद अर्थात् जो बात हुजूर (सल्ल0) की लाई हुई बातों से अलग होगी, गुमराही होगी। हिदायत वह है जो अल्लाह व रसूल (सल्ल0) से हमको मिली हो। गुमराही वह है जो दीन में नई बात इख्तियार की गई है। जिसकी अल्लाह और उसके रसूल के यहाँ कोई सनद नहीं और मार्ग–दर्शन नहीं मिलता, वह बिदअत है। और हर बिदअत ज़लालत और गुमराही है।

हमें तो आप (सल्ल0) की पवित्र जीवनी और आपकी सुन्नत का अनुकरण करना है ताकि परलोक (आखिरत) में अगर आपसे मुलाकात मुकद्दर हो तो आप यह न कहें कि तुमने हमको ख़ुश नहीं किया, सिर्फ अपने को ख़ुश करते रहे और शान व शिकोह से अपना दिल बहलाते रहे और हमारी सुन्नतें मिटती रहीं। हमें सीरते पाक के जल्सों में सुन्नत के अनुकरण (इत्तिबाअ) को जरूर सामने लाना चाहिये। अल्लाह पाक हम सबको इत्तिबाअ सुन्नत की तौफीक अता फ़रमाये। आमीन!

(उर्दू मासिक रिज़वान, लखनऊ
सितम्बर 2010 से साभार)

❑❑

कुर्आन की शिक्षा

बिहिश्त गुनाह और दुश्मनी की जगह नहीं, यह चीजें दुन्या की है जो तुम्हारे इम्तिहान के लिये बनाई गई है।

6. यानी दुन्या में हमेशा नहीं रहोगे बल्कि एक मुकर्ररा वक्त तक वहाँ रहोगे और वहाँ की चीजों से फाइदा उठाओगे और फिर हमारे ही सामने आओगे, और मुकर्ररा वक्त हर–हर शख्स के लिये उसकी मौत का वक्त है और तमाम आलम के लिये कियामत का।

❑❑

किस्त 8

ख़वातीने इस्लाम

(इस्लाम में महिलाओं का स्थान)

- अनु0 : हबीबुल्लाह आज़मी

- मौ0 अब्दुर्रहमान नग्रामी नदवी

मजहब और मजहब की तरफ दावत देने वालों की मुहब्बत और अज़मत (महानता)

ऊपर के पन्नों में तुम पढ़ आए हो कि औरतों ने किस उदार हृदय के साथ अपनी जान व माल को इस्लाम पर कुर्बान कर दिया। उपरी शीर्षक में तुम्हें वही तस्वीर नज़र आएगी लेकिन रंग ढंग तराश–खराश, लिबास का अन्दाज़ नया और कुछ अलग होगा। तुम देखोगे कि जिस स्थान पर मजहब और किसी फानी (मिटने वाली) चीज का मुकाबला आ गया है तो उन्होंने निहायत लापरवाही के साथ उस चीज को ठुकरा दिया और मजहब के आदेश को अपने सीनों से लगाया। जब उनके खास सगे सम्बन्धियों ने पैगम्बरे इस्लाम का मुकाबला करना चाहा और उसके लिए अपने रिश्तों और सम्बन्धों का वास्ता दिया तो उन्होंने बिना झिझक उसे रद कर दिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज्जत व महानता को बरकार रखने में एड़ी चोटी का जोर लगा दिया।

अबू सुफयान, अबू जेहल के बाद कुरैश कौम के सरदार मुकर्रर हुए थे उनकी बेटी रमल्ला अर्थात हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि0) रसूल की पवित्र बीवियों में दाखिल थीं। हुदैबिया की सुलह में जो समझौता कुरैश और मुसलमानों में हुआ था, मक्का वालों ने उसे बरकरार न रखा। खुदा का यह नूर (प्रकाश) दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था और मुसलमानों की शान व शौकत में रोज बरोज उन्नति होती थी। अबू सुफयान को डर हुआ कि शायद मुसलमान अवसर पाकर हमला न कर दें, इसलिए वह दोबारा सुलह के करार को ताजा करने खुद मदीना मुनव्वरा आए। हज़रत अबू बकर (रज़ि0) हज़रत उम्र (रजि0) तथा एक–एक करके तमाम सहाबः से मिले लेकिन उनके समर्थन के लिए कोई तैयार न हुआ और सबने इन्कार कर दिया। वह चाहते थे कि उनका कोई समर्थक हो तो वह रसूल सल्ल0 के दरबार में हाजिर हों कि शायद एक मुसलमान मुसलमान की शिफारिश कर दे तो काम बन जाय। होते–होते ख़याल आया कि खुद मेरी बेटी रसूल सल्ल0 के हरम में दाखिल है, अगर मैं उसके पास जाऊँ तो शायद बाप की मुहब्बत जोश में आए और यह काम पूरा हो जाए। इस इरादे से वह हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि0) के घर चले।

अब तुम खुद फैसला करो कि वर्षों का छुटा हुआ बाप, बेटी से मिलने के लिए जा रहा है। बाप को जान का डर है और इसीलिए वह बेटी के घर जाता है कि उसकी कोशिश से दोबारा सुलह हो जाए। उस सूरत में बेटी का क्या कर्तव्य होगा। स्वभाविक प्रेम का तो यही तकाजा है कि वह दौड़ कर बाप से लिपट जाए, प्रेम की अधिकता से रोते–रोते हिचकियाँ बन्ध जाये। उसकी आवभगत में तम–मन धन से सब तज दे।

यह भी ख्याल रखो कि अबू सुफयान उस लश्कर के सरदार हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान की प्यासी थी। वह उन लोगों में थे जिनके जुल्म से पैगम्बरे इस्लाम सल्ल0 को अपने वतन का त्याग करना पड़ा। बहरहाल अब अबू सुफयान उम्मे हबीबा (रज़ि0) के घर पहुँचे, सामने एक बिस्तर लगा हुआ था। उम्मे हबीबा ने बाप के मान सम्मान के बजाए सबसे पहला काम यह किया कि उस बिस्तर को उलट दिया। अबू सुफयान को यह बात बहुत

बुरी लगी। कारण पूछा तो उन्होंने कहा तुम मेरे बाप जरूर हो लेकिन अफसोस कुफ्र की गंदगी में लिपटे हुए हो और यह बिस्तर आप सल्ल0 का है, जो शख्स शिर्क की गंदगी में लिपटा हुआ हो वह पैगम्बरे बरहक (सत्य के दूत) के बिछौने पर बैठने का हक नहीं रखता।

इस प्रकार की एक और घटना उमर (रज़ि0) को भी पेश आई थी। जब वह अपनी बहन के इस्लाम लाने की खबर सुन कर उनके घर गये और कलाम मजीद का वह टुकड़ा उनसे माँगा जो हज़रत खुबाब (रज़ि0) उनको पढ़ा रहे थे तो उनकी बहन ने जवाब दिया कि अगर तुम सहीफा (ग्रन्थ) को अपने हाथ में लेना चाहते हो तो जाओ स्नान कर के आओ कि यह खुदा का कलाम (ईशवाणी) है। इसका मान सम्मान लाज़मी (अनिवार्य) है। जब हुजूर सल्ल0 का देहान्त हुआ तो उम्मे ऐमन (रज़ि0) फूट–फूट कर रोती थीं। हज़रत अनस (रज़ि0) ने पूछा कि क्यों रोती हो (मौत तो हर एक के लिए है)। उम्मे ऐमन (रज़ि0) ने कहा मैं इसलिए नहीं रोती कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुन्या से विदा हो गये बल्कि मैं इसलिए बेचैन हूँ कि आज दुन्या से वही (ईशवाणी) का सिलसिला समाप्त हो गया।

सगे सम्बन्धियों की मौत का दुःख किस कदर शदीद (उग्र) होता है लेकिन देखो! मुसलमान महिलाओं ने मजहब का इस अवसर पर कितना लिहाज रखा। बद्र के शहीदों की खबर जब मदीना में आई तो बहुत से घर मातमकदः (शोक गृह) बने हुए थे लेकिन हारिस बिन सराका की माँ ने कहा कि जब तक हुजूर सल्ल0 न तशरीफ लाएं मैं अपने बेटे की मौत का शोक नहीं कर सकती। मैं आप सल्ल0 से पूछूंगी कि वह अपने कर्म के बदले में जन्नत का हकदार है या खुदा के अजाब का? अगर खुदा की प्रसन्नता प्राप्त की तो उसके लिए रोना न चाहिये कि यही उसके अच्छे कर्मों का फल है और अगर वह खुदा के अजाब में गिरफ्तार हुआ तो बेशक रोना चाहिये कि अपनी हमेशा की जिन्दगी को बरबाद कर दिया। मजहब की मुहब्बत और दीन की महानता का इस से बढ़कर और क्या नमूना पेश किया जा सकता है?

पति–पत्नी के सम्बन्ध कितने गहरे होते हैं। मुस्लिम महिलाओं का धार्मिक प्रेम उससे भी बढ़–चढ़ कर रहा और इस मजबूत सम्बन्ध को भी तोड़ा दिया। असवद अ़लसी ने जब नबूवत का दावा किया और इस्लामी फौजों ने उसका घेराव किया तो उचित ढंग से हमला करने की सूरत उसकी पत्नी ने बताई और उसी की सहायता से वह कत्ल हुआ। आज हमारे देश में कितनी औरतें हैं जो अपने धर्म का ज्ञान रखती हैं? और वह इस्लाम धर्म के इस सुदृढ़ और मजबूत सम्बन्ध को कहाँ तक वास्तविक तौर पर समझती हैं? जो उनके और शरीअत के दर्मियान कायम है। किसी शरअी आदेश के बारे में उनसे पूछो तो यही उत्तर देंगी कि खुदा का ओदश है लेकिन उस जमाने की औरतें जानती थीं कि हमारे मजहब की क्या वास्तविक्ता है वह इसको अच्छी तरह जानती थीं कि शरीअत हमरे लिए सहूलत और आसानी प्रदान करती है न कि कठिनाईयों का एक भण्डार है। उन्हें इस का ज्ञान था कि खुदा ने हमारे लिए जो नियम बनाए हैं वह हमारे स्वभाव के अनुसार और उसकी सीमा से बाहर न होगा।

चुनानचि अमीमा बिन्ते रफीका (रज़ि0) ने जब हुजूर सल्ल0 से बैअ़त (भक्ति प्रतिज्ञा) का सम्मान प्राप्त किया तो आदेश और उन कर्मों की शिक्षा लेने के बाद जिन पर बैअ़त ली जाती थी, आप सल्ल0 ने फरमाया, अनुवाद : इन तमाम आदेशों में विशालता और ताकत शर्त है। अमीमा ने तुरंत कहा :– अनुवाद : खुदा और उसका रसूल हम पर खुद हम से अधिक कृपालु है। यह वाक्य शरीअत का साराँश है और पैगम्बरे खुदा का उपदेश है, अनुवाद : "दीन सरलता का संग्रह है" कुर्आन मजीद की इस आयत प्रतिध्वनि (सदाए–बाजगश्त) है। अनुवाद : खुदा तुम्हारे लिए आसानी चाहता है समय का इच्छुक नहीं। अमीमा के उत्तर का विवरण (तफसील) यूँ समझो कि रसूल पर

फिदा होने वाली ने मानो यह वाक्य अपनी मुत्तबईन (अनुगामी) की तसल्ली के लिए कहा होता कि हमें इसकी कोई जरूरत न थी इसलिए की हमारा अकीदा (हमारी आस्था) है कि खुदा ने हमारे लिए जो आदेश दिये हैं और उसके पवित्र रसूल के पाक कथन का सार दया तथा कृपा का स्वभाव है। कर्म व जाप (वजीफा) के निर्धारण में उन्होंने हमारी क्षमता का बेहतर से बेहतर अनुमान कर लिया है।

इस प्रकार एक और अवसर पर कुछ औरतें बैअत के लिए हाजिर हुईं। एक औरत के हाथ में सोने के कंगन थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उससे कुछ दुःखी हृदय (कबीदः खातिर) हुए, उसने तुरंत भीड़ से बाहर आकर कंगन उतार कर फेंक दिये और बैअत का सम्मान प्राप्त किया। सोने का इस्तेमाल औरतों के लिए जाइज है लेकिन आँ हज़रत सल्ल0 के दुःखी होने का कारण यह हुआ कि बैअत की शर्तों में यह भी था कि औरतें तमाम माल अपना तमाम धन खुदा की राह में बिना संकोच खर्च कर देंगी।

मक्का में जब कुरैश का अत्याचार अधिक बढ़ गया तो आप सल्ल0 कुछ दिनों के लिए ताएफ चले गये कि वहाँ इस्लाम के प्रसार और मजहब के प्रचार का काम अंजाम दें लेकिन ताएफ वालों का बुरा व्यवहार मक्का वालों से भी बढ़ गया। हुजूर सल्ल0 के पीछे कुत्ते छोड़ दिये जाते थे बच्चों को सिखा दिया गया था कि यह पागल है। (नअुजुबिल्लाह पनाह माँगते हैं खुदा से) इसे पत्थरों और ढेलों से जख़्मी करो। इस हालत में रुकय्या नामी एक औरत ने आप सल्ल0 की मेहमानदारी की और इस्लाम में दाखिल हुई।

इस प्रकार की एक और आश्चर्यजनक घटना देखो और गौर करो कि औरतों को मजहब की मुहब्बत ने सरशार (उन्मत्त) कर दिया था। आँ हज़रत सल्ल0 की (सौतेली लड़की) हज़रत जैनब (रज़ि0) के दो बेटे यौमे हुरः में मारे गये। हुरः की लड़ाई खुद आपस के मुसलमानों में हुई थी जिसमें अधिकाँश सहाबा शहीद हुए थे। इन दोनों की लाशें जब उनके सामने लाई गईं तो इस्लामी शिक्षा के अनुसार "इन्नालिल्लाही व इन्ना इलैहि राजेऊन) पढ़ कर कहा, एक तो एकाँतवास (गोशानशीन) था उसे जंग से कोई सम्बन्ध न था। दूसरे ने मुसलमानों के मुकाबले में तलवार उठाई और मारा गया, इसलिए मुझे पहले के बनिस्बत दूसरे की मौत का अधिक दुःख है क्योंकि डर है कि उसका अन्त अच्छा नहीं हुआ। उम्मे कुलसुम बिन्ते उकबा बिन अर्बा मुईत अकेले मक्का से अपने माता पिता को छोड़ कर मदीना हिज़रत करके चली आईं, वह कौन सा आकर्षण था जो उन्हें खींच लाया। इस का उत्तर सिवाए इस के और क्या दिया जा सकता है कि मजहब और मजहब की दावत देने वाले की मुहब्बत।

इस मजहबी मुहब्बत और मिल्लत (समुदाय) के प्रेम का नतीजा था कि औरतें निहायत आजादी के साथ "अम्र बिल माअरुफ" और नही अनिल मुन्कर" (नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना) के अदा करने का काम लेतीं। एक बार हज़रत उमर (रज़ि0) मस्जिद से निकले, एक औरत ने रास्ते में आकर सलाम किया और कहा कि ऐ उमर! मैं तुम्हें उस समय से जानती हूँ जब लोग तुमको उमर–उमर कह कर पुकारते थे। आज तुम अमीरुल मोमिनीन और मुसलमानों के हाकिम हो। देखो प्रजा और महकूमों के मामलों में खुदा से और उसके क्रोध और प्रकोप से डरते रहो।

हज़रत समराअ बिन्ते नहीक हाथ में कोड़े लेकर निकलतीं और जिसको शरीअत के खिलाफ काम करते देखतीं उसे कोड़ा मार कर ताड़ना देतीं।

यही वह चीज है जिसकी हम मुसलमानों में अब कमी है। क्या शुभ था वह युग जब बहादुर और शेर दिल औरतें हक के मामले में राह में अमीरुल मोमिनीन को टोक देतीं और वह उनकी हक बात को स्वीकार कर लेते और कैसे पवित्र थे वे दिन जबकि हमारी माएं बहनें "अम्र बिलमाअरुफ़ व नही अनिल मुन्कर" का कर्तव्य अंजाम देतीं थीं।

❑❑

परिश्रम और धैर्य

डॉ0 सैय्यद मुहीउद्दीन कादिरी 'ज़ोर'

"इन्सान अपनी किस्मत का आप निर्माता होता है, इसलिए कि खुदा मदद करता है उन्हीं लोगों कि जो अपनी मदद आप करते हैं। एक शायर ने लिखा था और कितना सही लिखा था कि खुदा ने प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे हाथ जरूर दिये हैं जो आसमानों तक पहुँच सकते हैं शर्त यह है कि वह फैलाये जायें। सृष्टि न्याय पर निर्भर है, वह स्वयं इन्साफ करती है और मुँसिफ मिजाजों को पसन्द भी करती है। जो व्यक्ति उसके हक में इन्साफ करता है वह उस का बदला दिये बिना नहीं रहती। जो व्यक्ति दुनिया में, इस दुनिया मे जहाँ घटनायें घटित होती रहती हैं, एक देखने वाली आँख, सुनने वाले कान, सोचने और समझने वाली अक्ल और प्रभावित होने वाले दिल के साथ जिन्दगी बसर करता है, जमाना उसके तमाशे के लिये रंग–बरिंग के नजारे पेश करता जाता है। दुनिया उसकी खातिर तरह–तरह की रागनी छेड जाती है। सृष्टि उसकी दिलचस्पी के वास्ते आये दिन नई चीजें जाहिर करती रहती है और दुनिया उसको हर समय ऐसे रूप में नजर आती है जिस से वह प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। जो व्यक्ति स्वार्थी है खुद परस्त है और खुदनुमा है, दुनिया भी उसको स्वार्थी, खुदपरस्त और खुदनुमा नजर आयेगी। वह जब तक दूसरों की रोटियों पर की दाल अपनी रोटी पर खींचता रहेगा, उस समय तक उसको भूखा उठना पड़ेगा। वह जब तक अपने घमंड में डूबा रहेगा, सृष्टि का एक–एक जर्रा सूरज बनकर उससे अलग होना चाहेगा। वह जब तक हर मामले में 'मैं कोई चीज हूँ' का नारा लगाता रहेगा, हर एक मामला 'चीजे दीगर' के रूप में नजर आता जायेगा। सृष्टि और उसकी सारी मखलूक खुद इन्सान की मनः स्थिति का दर्पण होती है। हमदर्द इन्सान के साथ दुनिया की सारी मखलूक हमदर्दी करने के लिये बढ़ती हैं जिस व्यक्ति में निष्ठा होगी, दुनिया का कण–कण उससे आ लिपटने के लिये लपकेगा। जो कोई मुहब्बत भरी आँखों से जमाने पर नजर डालता है, जमाना का हर मंजर उसको अपनी तरफ खींचने और उसकी दिलजोई करने में लीन दिखाई देता है। जहाँ कहीं कोई व्यक्ति किसी मकसद की खातिर परिश्रम और धैर्य से काम करता है, खुद उसका मकसद उसकी तरफ खिंचा चला आता है।"

(पत्रिका "हुमायूँ" लाहौर नवम्बर 1926 ई0, 'सब रस' हैदराबाद अगस्त 2010 में प्रकाशित)

– प्रस्तुति : एम0 हसन अंसारी ❑❑

शहीदों को सलाम

पढ़ते है बीरे मऊना के शहीदो पर सलाम
करते हैं वाके रजी के 6 शहीदो को सलाम
हाफिजे दीं जन्नत मकीं बदरी शहीदों को सलाम
उहुद के ग़ज़वे में जानें देने वालों को सलाम
सारे ग़ज़वों और जंगों के शहीदों को सलाम
करबला में दस मुहर्रम के शहीदों को सलाम
दीन की पहली शहीदा हज़रते सुमय्या को सलाम
आशिके दीं सय्यदुश्शुहादाए हमजा को सलाम
और शहीदे दीं उमर फारूक आज़म को सलाम
और शहीदे बावफा जिन्नूरैन उस्मान को सलाम
फिर शहीदे हक़ अलीये मुरतजा को भी सलाम
और शहीदे करबला हज़रत हुसैने मुजतबा को भी सलाम
फिर शहीद इब्ने जूबैरे इत्तिका को भी सलाम
अस्सलामो अस्सलाम अस्सलामो अस्सलाम
नौहा मातम जाने वालो पर नहीं करते हैं हम
तरके सुन्नत का इरादा भी नही करते हैं हम

स्वयं लिखित जीवनी
हबीबुल्लाह आज़मी

मेरा जन्म एक ऐसे मुस्लिम बाहुल्य कस्बे मऊनाथ भंजन जिला आजमगढ़ में हुआ था जहाँ दीनी तालीम के दो बड़े दारूल उलूम "यूनिवर्सिटी" थे। उन मदरसों के उलमा में जमीअतुल उलमा हिन्द का पूरा प्रभाव था। वह उलमा जो स्वतंत्रता संग्राम में 1857 की जंगे आजादी के पहले से अंग्रेजों की गुलामी से भारत को आजाद कराने संघर्ष कर रहे थे और जिन्होंने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की तैयारी के लिए रेशमी रूमाल की तहरीक चला कर पूरे भारत में इस संग्राम को सफल बनाने का प्रयास किया था। वह 1857 की असफलता के बाद खामोश नहीं थे। जमीअतुल उलमा के अध्यक्ष मौलाना हुसैन अहमद मदनी बराबर मऊ आते रहते थे। उनके भाषणों को बचपन में सुनकर मेरे मन में देश की आजादी का चिराग़ रोशन हुआ और मैंने अपने प्रारम्भिक विद्यार्थी जीवन से ही आजादी के मतवालों की जीवनी पढ़नी शुरू कर दी। जब मैंने मिडिल पास करके जीवन राम हाई स्कूल में प्रवेश लिया तो मुझे ऐसे अध्यापक और साथी मिले जिनसे मुझे क्रान्तिकारियों की जीवनी और उनके कारनामों को पढ़ने की प्रेरणा मिली और ऐसी पुस्तकों को पढ़ने से मेरे मन में अंग्रेजी सरकार से नफरत और उनको देश से निकाल फेंकने की तमन्ना पैदा हुई।

जब मैं कक्षा 10वीं में था उसी समय 9 अगस्त 1942 को काँग्रेस ने "भारत छोड़ो" का प्रस्ताव पास किया। काँग्रेस के संभी नेता बन्दी बना लिए गए यह खबर आग की तरह पूरे देश में फैल गई। दूसरे दिन जब यह खबर हम लोगों ने समाचार पत्रों में पढ़ी तो दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने पूरे स्कूल में हड़ताल करा दी और एक जुलूस की शक्ल में कस्बे के बाजार और स्कूलों को बन्द कराने के लिए निकल पड़े। इस जुलूस का नेतृत्व मैं कर रहा था। पूरे कस्बे की दुकाने बन्द कराई गईं। सभी स्कूलों के छात्र और कस्बे के हिन्दू मुसलमान सभी जुलूस में शरीक हुए। एक बड़ी सभा मिर्जाहादीपूरा पुलिस चौकी के मैदान में हुई। वहाँ छात्रों के भाषण हुए आजादी के नज्म पढ़ी गई। रात को छात्रावास में मीटिंग हुई। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र भी आ गए थे। उस सभा में वह भी शरीक हुए उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि मऊ थाने पर कब्जा कर लिया जाये। इस सिलसिले में स्थानीय काँग्रेस नेताओं से सम्पर्क स्थापित किया गया। उन्होंने परामर्श दिया कि पहले हमें आन्दोलन को तेज करना चाहिए और पूरी जनता को आन्दोलन में शरीक करना चाहिए। दूसरे दिन भी हड़ताल और फिर एक बड़ा जुलूस निकाला गया और उसके बाद विद्यार्थी नेताओं की एक मीटिंग में ये तय किया गया कि हम लोगों को आजमगढ़ शहर के छात्रों और वहाँ के आन्दोलनकारियों से सम्पर्क स्थापित करके उनसे मार्गदर्शन लेकर अपने आन्दोलन को चलाना चाहिए। अतः एक दल, जिसमें कामता प्रसाद सिंह, सुमेर सिंह और मैं था, दोपहर की ट्रेन से आजमगढ़ के लिए स्टेशन पहुँच गए। हमारे साथ छात्रों की एक भीड़ भी स्टेशन आ गई जिसका नेतृत्व अबूबकर अंसारी खैरुलबशर कर रहे थे। उसी बीच यह सूचना आई की जनता ने मऊ नोटीपाइड एरिया को फूंक दिया और रौजा चौक पर गोली चल गई। स्टेशन पर आई भीड़ यह खबर सुनकर उत्तेजित हो गई और उसने ट्रेन के शीशे तोड़ना शुरू कर दिया। ट्रेन चल पड़ी। खुरहट स्टेशन पर पहुँचे तो एक भीड़ इक्ट्ठा थी हम लोगों को देखते ही नारे लगाने लगी और स्टेशन में आग लगा दी। हम लोग उसी स्टेशन पर रूक गये और यह फैसला किया कि हमें इस ट्रेन से नहीं जाना चाहिए क्योंकि आजमगढ़ पहुँचने से पहले ही सूचना वहाँ पहुँच जाएगी और पुलिस वहाँ हम

लोगों को गिफ्तार कर लेगी। सुमेर सिंह का गाँव वहाँ से दो–तीन मील दूर था। हम लोग वहाँ चले गए। रात को वहीं रूके और दूसरे दिन आजमगढ़ के लिए रवाना हुए। वहाँ पहुँचने पर पता चला कि यहां के काँग्रेसी नेता और छात्र नेता सराए मीर के एक बड़े हाते में टिके हुए हैं और वहीं से आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। वहीं छात्र नेता श्री हरी जो मऊ में मेरे साथी रह चुके थे और अब सनातन धर्म कालेज, आजमगढ़ में पढ़ रहे थे, मौजूद हैं। मैं वहाँ पहुँचा काफी लोग वहाँ मिले और रात वहीं गुजारी। दूसरे दिन सूचना मिली की गोरों की फौज आजमगढ़ पहुँच गई है और दमन की कार्यवाही बड़े जोर शोर से प्रारम्भ हो गई है। सब लोगों की सलाह हुई कि सबको यहाँ से प्रस्थान कर देना चाहिए। मैं मऊ वापस आ गया। वहाँ भी फौज पहुँच चुकी थी और आन्दोलन के दमन का कार्य शुरू हो गया था। वहाँ के एक बड़े नेता राधे रमन अग्रवाल गिरफ्तार हो चुके थे। उनके घर पर फौज ने छापा मारा और घर का सारा सामान कपड़े लत्ते लुटा दिया। अब आन्दोलन यहाँ समाप्त हो चुका था।

मैं स्कूल जाने लगा। एक महीने के बाद मुझे मालूम हुआ कि मेरे नाम वारेन्ट हैं। दूसरे दिन स्कूल में लगभग 11 बजे रेलवे का एक दरोगा और चार बन्दूक धारी सिपाही हेडमास्टर साहब के कमरे में आए। उनसे बातचीत हुई और चपरासी मुझे बुलाने आया। पूरे स्कूल के छात्र बाहर निकल आए और मुझे रोका और पुलिस से संघर्ष करने के लिए तैयार हो गए। मैंने देखा कि अब तो गोली चल जाएगी छात्रों की एक भारी संख्या गोलियों का शिकार हो जाएगी। मैंने एक छोटा सा भाषण दिया और उन्हें समझाया कि यह अवसर जोश का नहीं वरन् होश से काम लेने का है। हम निहत्थे बन्दूकधारियों से नहीं लड़ सकेंगे आप लोग खामोश रहिये। लड़ाई में कभी–कभी पीछे हटना पड़ता है। आजादी की लड़ाई अब छिड़ी है अन्त में सफलता हमें ही मिलेगी। आजादी हमें अवश्य मिलेगी। हमें इन्तिजार करना चाहिए।

फलस्वरूप छात्रों ने कोई अनुशासनहीनता नहीं की और जब मैं हेडमास्टर कक्ष में पहुँचा तो दो और छात्रों खैरूल बशर और सुदामा चौबे को बुलाया गया। हेडमास्टर साहब ने कहा कि आप लोग दरोगा साहब के साथ चले जाएं वह कुछ पूछताछ करेंगे। हम लोग उनके साथ चले। पूरे स्कूल के छात्र बाहर खड़े देखते रहे मगर मेरे भाषण का प्रभाव यह था कि उन्होंने कोई विरोध प्रदर्शन नहीं किया। पुलिस हम लोगो को स्टेशन ले गई और रात भर हवालात में रख कर दूसरे दिन सुबह की रेल से आजमगढ़ जेल भेज दिया। एक हफ्ते बाद जेलर ने मुझको अपने कक्ष में बुलाया और कहा कि तुम माफी माँग लो तो तुम्हे छोड़ दिया जाएगा। मैंने इन्कार कर दिया।

उस समय माँ–बाप का मैं इकलौता बेटा था। उनके दिल पर जो गुजरी होगी उसका अन्दाजा आसानी से लगाया जा सकता है। मेरे ताऊ हकीम मुहम्मद सलीम जो मिडिल स्कूल के हेडमास्टर थे उन्होंने अथक प्रयास किया। जिला कलक्टर और कप्तान पुलिस से जो अंग्रेज था, मिले। उन्होंने स्कूल का प्रमाण पत्र दिखाया जिसके अनुसार उस समय मेरी उम्र केवल चौदह वर्ष (14) की थी। उन्होंने उन अधिकारियों के सामने यह बात स्पष्ट की कि भला 14 वर्ष का एक बालक इतने बड़े आन्दोलन का नेतृत्व कैसे कर सकता है तथा स्टेशन फूँक सकता है। कप्तान ने यह आदेश दिया कि शिनाख्त कार्यवाही में यदि ये छात्र नहीं पहचाने जाते तो इन्हें छोड़ दिया जाये। कुछ ऐसे इन्तजाम मेरे ताऊ ने किया कि दोनों गवाहों ने हम तीनों को नहीं पहचाना और हमको एक माह कारागार में रखने के बाद छोड़ दिया गया।

दूसरे दिन हम लोग जेल से छूटने के बाद सीधे स्कूल पहुँचे। हाईस्कूल परीक्षा का आवेदन पत्र भरा जा रहा था। मेरा नाम कट चुका था। मेरा हाई स्कूल वज़ीफा बन्द कर दिया गया था। हेडमास्टर साहब से काफी बातचीत के बाद मेरा नाम लिख दिया गया और परीक्षा

फार्म भरवा लिया गया।

इस प्रकार मैंने 1943 में हाई स्कूल पास किया। तत्पश्चात् मैंने क्रिश्चियन कालेज इलाहाबाद से इन्टर की परीक्षा पास की और मुस्लिम यूनीवर्सिटी, अलीगढ़ में दाखिला लिया। उस जमाने में अलीगढ़ विश्वविद्यालय में मुस्लिम लीग का बड़ा जोर था। वहाँ कुछ विद्यार्थियों ने मुस्लिम लीग के विरोध में नौनलिस्ट मुस्लिम फेडरेशन बना रखा था। उसी कार्यकारिणी का मैं भी सदस्य था, महीने में एक बार इसकी खुफिया मीटिंग किसी पार्क में हुआ करती थी। अलीगढ़ से बी0ए0 तथा बी0टी0 करने के बाद मैं मजीदिया इस्लामिया इन्टर कालेज इलाहाबाद में अध्यापक हो गया। चार साल बाद कमीशन से मेरा सेलेक्शन शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश में हो गया और मेरी प्रथम नियुक्ति भूगोल अध्यापक के पद पर गर्वमेन्ट हाई स्कूल हरदोई में हुई और फिर विभिन्न पदों पर कार्यरत रहते हुए मैं जून 1986 में प्रधानाचार्य राजकीय हुसैनाबाद इन्टर कालेज, लखनऊ के पद से सेवानिवृत्त हो गया। उसके पश्चात् अब तक सामाजिक और शिक्षा समितियों से जुड़ा हुआ हूँ।

स्वतंत्रता संग्राम का उद्देश्य यह था कि देश में शान्ति भाई–चारा एकता, साफ सुथरा प्रशासन और शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय और देश के हर क्षेत्र में उन्नति हो और वह अपने इन मूल्यों द्वारा संसार का मार्ग दर्शन करे जिसके लिए हमारे नेताओं ने हमें एक ऐसा संविधान दिया जो धर्म निरपेक्ष जनतंत्र और सामाजिक न्याय पर आधारित है। परन्तु आज देश भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, घोटालों, जातिवाद, क्षेत्रवाद की आग में जल रहा है। आज़ादी का मूल उद्देश्य अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। देश के विद्यार्थियों, अध्यापकों से यही अनुरोध है कि वह देश को इन बुराईयों से उभारें तभी देश पर कुर्बान होने वाले जियालों की कुर्बानी सफल होगी। आज़ादी की असल लड़ाई अब शुरू हुई है। विद्यार्थी और अध्यापकगण ही देश को असली स्वतंत्रता प्रदान कर सकते हैं और इसे जन्नत का नमूना बना सकते हैं।

❑❑

इस्लाम तलवार से फैला .....

हज़रत खालिद (रज़ि0) वहाँ पहुँचे तो समस्त कबीलः मुसलमान हो गया। (जरकानी)

आम यमन में धार्मिक प्रचार–प्रसार के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुआज बिन जबल (रज़ि0) और अबू मूसा अश्अरी (रज़ि0) को यमन के एक–एक जिले में भेजा। चलते समय आप (सल्ल0) ने उन लागों को जिन बातो की शिक्षा दी वह वास्तव में इस्लामी प्रचार–प्रसार के सिद्धान्त हैं। (और उन आक्षेपों का उत्तर है जो इस्लाम पर लगाए जाते हैं। आप (सल्ल0) ने कहा "सरलता से कार्य करना, कठोर न बनना, लोगों को शुभ समाचार सुनाना, तुम दोनों वहां मिलकर काम करना, तुमको वहाँ ऐसे लोग मिलेंगे जो पहले से किसी के मानने वाले हैं। जब उनके यहाँ पहुँचना तो पहले एकेश्वरवाद (तौहीद) और ईशदौत्य (रिसालत) का निमंत्रण देना, जब वह उसे स्वीकार लें तो कहना कि अल्लाह ने तुमपर दिन–रात पाँच वक्त की नमाज अनिवार्य की है, जब ये भी मान लें तो उनको समझाना कि तुम पर जकात (धर्मादाय) भी अनिवार्य है, तुममें से जो धनी हो उनसे लेकर जो निर्धन हैं उनको दे दी जाएगी। देखो! जब वह जकात देना स्वीकार कर लें तो चुन कर अच्छी–अच्छी चीजे न ले लेना। पीड़ितों के श्राप (बद्दुआ) से डरते रहना कि उसके और अल्लाह के मध्य कोई पर्दा बाधक नहीं है। हज़रत अबू मूसा अश्अरी (रज़ि0) ने पूछा ऐ नबी (सन्देष्टा)! हमारे मुल्क यमन में जौ और शहद की शराब बनती है, ये भी हराम है? आपने कहा हर चीज जो नशा पैदा करे हराम (वर्जित) है। (इजाफा ता बहरैन) (जारी.....)

❑❑

बिदअत

- मौलाना सैफुल्लाह रहमानी

इस्लाम का अकीदा है कि नुबुव्वत का दरवाजा खुदा के आखिरी नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अरबी सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर बन्द हो गया और यह दीन और शरीअत मुकम्मल और तमाम हो गई। अब इसमें अदना कमी बेशी और हज्फ व इजाफा की गुँजाइश नहीं और इस में अपनी तरफ से कोई इजाफा और ईजाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की खत्मे नुबुव्वत पर हमला और इस दीन के नातमाम और ना मुकम्मल होने का एलान है। यह इजाफा अगर तअब्बुद के रंग में हो तो भी काबिले रद है और तजद्दुद के पैरहन में हो तो भी ना काबिले कबूल है।

लुगवी मअ़ना

दीन में किसी किस्म का इजाफा और ईजाद (नई बात) को बिदअत कहते हैं। बिदअत के लुगवी मअ़ना तो ईजाद के हैं, अबुलफत्ह नसिर बिन अलमुतरजी मुतवफ्फा 616 हि0 के अलफाज में बिदअत इब्तिदा से है जब आदमी कोई नई चीज ईजाद करे तो कहा जाता है इब्तिदा अल अम्र जैसे कि रिफअत इरीतफअ से माखूज है।

इसतिलाही तारीफ

शरह की इसतिलाह में बिदअत दीन के मुआमले में ऐसी नौ ईजाद चीज को कहते हे जो न रसूल के जमाने में हुई हो न सहाबः के जमाने में न हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के कौल व इरशाद या खामोशी से उसका जवाज मिलता हो और न उस जमाने में उसकी कोई अस्ल और नजीर हो। दीन में कमी बेशी को बिदअत कहते हैं।

बदरुद्दीन ऐनी फरमाते हैं। बिदअत दर अस्ल किसी ऐसी चीज का वजूद में लाना है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के जमाने में नहीं थी। हाफिज इब्नि रजत हंबली (रह0) लिखते हैं बिदअत से ऐसी नौ ईजाद बात मुराद है जिसकी शरीअत में कोई अस्ल मौजूद न हो और अगर शरीअत में फिलजुम्ला उस पर दलालत करने वाली कोई अस्ल मौजूद हो तो वह शरअन बिदअत नहीं है। सय्यद शरीफ जुरजानी (रह0) लिखते हैं : बिदअत वह नौ ईजाद बात है जिस पर सहाबः व ताबिईन आमिल न थे और न शरई दलील उसकी मुतकाजी हो। बिदअत की इस तशरीह से यह बात वाजेह हो गई कि दुन्यावी ईजादात जदीद वसाइल व आलात वगैरह बिदअत में दाखिल नहीं हैं। इस लिये कि उनका तअल्लुक दीन से नहीं है। इसी तरह वह दीनी चीज जिसकी मौजूदा सूरत तो कुरूने खैर (खैर के जमाने में) में मौजूद न थी लेकिन उनकी अस्ल उन अदवार (जमाने) में मौजूद हो वह भी बिदअत ना होगी मसलन मदारिस कि सुफ्फा उसकी नज़ीर है, वोट कि बैअत उसकी नजीर है। नमाज के लिये आल–ए–मुकब्बिरे सौत का इस्तेमाल कि इजदहाम के वक्त मुकब्बिरीन का तकबीराते इन्तिकाल कहना उसकी अस्ल है, जिहाद के लिये जदीद आलाते हर्ब का इस्तेमाल कुर्आन मजीद के हुक्म "तय्यारी करो दुश्मनो के लिये जो तुम कर सकते हो" से साबित है।

कोई बिदअत हसना नहीं

बिदअत के बाब में एक अहम मसअला बिदअत की हसना और सय्यअः या वाजिब, मुसतहब, मुबाह मकरूह और हराम के बीच तक्सीम का है। इससे इन्कार नहीं कि बाज़ सल्फे सालिहीन ने इस किस्म की तक्सीम फरमाई है वह अपनी नीयत के लिहाज से मुखलिस थे, उनका मक्सद बिदआत के लिये चोर दरवाजा खोलना नहीं था बल्कि बाज उन उमूर को जिनकी अस्ल कुरूने खैर में मौजूद थी लेकिन मौजूदा सूरत उससे मुखतलिफ थी या उनको लुगत और अपनी मौजूदा शक्ल के लिहाज से बिदअते हसना कह दिया और बिदअते शरई को बिदअते सय्यिअः से ताबीर कर

दिया जिन लोगों की नजर उन मिसालों पर हो जो बिदअते हसना के सिलसिले में किताबों में लिखी गई है वह इस बात को माने बिना कोई चारा न पाऐंगे। मसलन इल्मे नह्व व सर्फ, कुतुबे फिक्ह की तदवीन व तरतीब, तरावीह की जमाअत, मदारिस व मुसाफिर खानों की तामीर, खुर्द व नोश, फर्श और लिबास व मकान में नित नई चीजों की ईजाद और राहत बख्श सामान की ईजाद व इस्तेमाल। उन में से बाज चीज तो वह है जिनका तअल्लुक इबादत से नहीं, उमूरे आदत से है इस तरह अक्सर उमूर वह है जिनकी अस्ल अहदे रिसालत और अहदे सहाबः (रज़ि0) में मौजूद हैं नह्व व सर्फ के मुदव्विना कवाइद अपनी अस्ल शक्ल में कुर्आन व हदीस मे पहले से मौजूद है, फिर उनका अस्ल तअल्लुक अरबी जबान से है न कि इस्लाम से। फिक्हे इस्लामी की बाबत इस्तिंबात व इजतिहाद के अहकाम किताब व सुन्नत में मौजूद हैं। फिक्ह उन्ही की मुरत्तब शक्ल है। तरावीह की जमाअत खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है मदारिस व मुसाफिर खानों की तामीर के लिये सुफ्फा की नजीर मौजूद है जो अहदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मदरसा भी था और मेहमान खाना भी, खुर्द व नोश और निवास व मकान उमूरे आदत में हैं फिर कभी–कभी अच्छा खाना और अच्छे लिबास पहनना खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है, जिन लोगों ने उनको बिदअते हसना में शुमार किया है वह जाहिर है महज लुगत के एतिबार से बिदअत है। शरीअत में बिदअत की जो तारीफ की गई है यह उसमें दाखिल ही नहीं है। बाद के दौर में नफ्स परस्त और खौफे खुदावन्दी से आरी मशाइखे जुर (झूटे शैख) ने इस तक्सीम को अपनी हर तरह की बेराह रवी और गुमराही के लिये ढाल बनाया और हर बिदअत पर बिदअते हसना का गिलाफ चस्पा कर दिया। नतीजा यह निकला कि उसके बाद हर बिदअत सुन्नत करार पाई और कोई बिदअत बाकी नहीं रही। मुहक्किकीन ने इस खतरे का एहसास किया और पूरी शिद्दत से इस तक्सीम की मुखालफत की। इमाम शातिबी (रह0) लिखते हैं : यह तक्सीम ऐसी ईजाद है जिसकी कोई शरई दलील नहीं है। हज़रत मुजददिद अल्फ सानी (रह0) फरमाते हैं जो चीज शरअन मरदूद व नाकाबिल कबूल हो उसमें हुस्न क्यों कर पैदा हो सकता है और वह हसना किस तरह हो सकती है। इन बुजुर्गों ने जो बात कही है उसपर हदीस नातिक हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि हर नई चीज बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है। यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुले लफ्जों में हर ईजाद की हुई चीज को बिदअत करार दिया जिसका तअल्लुक दीन से हो, इरशाद है जिसने हमारे दीन में नई बात निकाली जिस पर हमारी तरफ से कोई दलील नहीं है वह रद्द है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बिदअत को गुमराही और काबिले रद्द करार दिया उसमें हसना और सय्यिअः की तक्सीम नहीं बताई। सहाबः (रज़ि0) जो सोहबते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वजह से यकीनन दीन के फहम व इदराक में पूरी उम्मत पर फाइक थे के तर्जे अमल से भी उसकी ताईद होती है। हज़रत इब्नि मस्ऊद (रज़ि0) कुछ लोगों को मस्जिद में नमाज के बाद जोर से तक्बीर पढ़ते हुए सुना तो सख्त खफा हुए और रावियों के बयान के मुताबिक उनको मस्जिद से निकाल कर ही छोड़ा। इसी से फुकहा ने इजतिमाई और जेहरी जिक्र की कराहत पर इसतिदलाल किया है। अब कोई बताए कि अगर शरीअत में बिदअत भी हसना होती तो हज़रत इब्नि मसऊद (रज़ि0) इस जिक्र को बिदअते हसना की फेहरिस्त में क्यों नहीं रखते। कुतुबे हदीस में मौजूद है कि एक शख्स ने नमाज से पहले ईद गाह में नफ्ल पढ़नी चाही तो हज़रत अली (रज़ि0) ने सख्ती से मना फरमाया हालाँकि नमाज का फेल हुस्न ही है न कि फेले

क़बीहा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) से उस मुअज्जिन की तंबीह साबित है जो अजान के बाद तसवीब करता था। अब तसवीब जाहिर है कि नमाज की दावत ही है अगर बिदअते हसना कोई चीज होती तो जरूर था कि इब्नि उमर (रज़ि0) ने उसको इसी जुमरे में रखा होता। इस तरह के बीसों वाकिआत सहाबा–ए– किराम (रज़ि0) से साबित है जो बिदअत की तक्सीम और बाज बिदआत के हसना होने की खुली तरदीद करते हैं। कुतुबे फिक्ह में इस सिलसिले में इस कदर नजीर मौजूद है कि उनको शुमार करना मुश्किल है। अजान कोई बुरी चीज नहीं बल्कि शआइरे इस्लाम में है। मोमिन के कब्र पर अजान देने को फुक़हा ने बिदअते हसना की फेहरिस्त में नहीं रखा बल्कि मना फरमाया। लेकिन मुसाफहा सलाम की तक्सीम और अखलाक का मजहर है लेकिन फज्र व अस्र के बाद के मुसाफहा को फुकहा ने मकरूह तरीका करार दिया है। मुआनका एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान से मुहब्बते तअल्लुक का इजहार है और इस लिहाज से कोई बुरा काम नहीं मगर ईदैन के बाद हमारे जमाने में मुआनक़ा का जो रिवाज है फुकहा उससे मना करते हैं। मुसलमानों की दावत और उनको खिलाना ऐन इस्लाम है, एक रिवायत में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतअमे तआम को सबसे अफजल अमल करार दिया है लेकिन जिस के घर में मौत हुई हो उसके अहले खाना की तरफ से सोवुम और चहारूम की दावत को बिदअत और मकरूह होने पर फुकहा मुत्तफिकुललिसान हैं। अब जाहिर है कि अगर बिदआत में हसना और सय्यिअः की तक्सीम दुरूस्त होती तो इन सारी बिदआत का हसना की फेहरिस्त में दाखिल होना चाहिये था और फुकहा को उनसे मना नहीं करना चाहिये था। इस लिये हकीकत यह है कि इस बाब में वही सहीह तसव्वुर है जो अल्लामा शातिबी (रह0) ने पेश किया है। इसके बग़ैर किसी बिदअत को बिदअत करार देना और सुन्नत और बिदअत के दरमियान खत्तेइमतियाज़ खींचना मुश्किल हो जाएगा। हाफिज इब्नि रजब हंबली (रह0) ने इस मसअले को बे गुबार कर दिया है। सल्फ के कलाम में जहाँ कहीं बाज बिदआत के हसना होने का जिक्र है वहाँ बिदअते लुगवी मुराद है ना कि बिदअते शरई।

बिदअत, हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रौशनी में

हदीस में कसरत से बिदअत और उसके मुरतकेबीन की मज़म्मत की गई है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने दीन के मुआमले में किसी नई बात का इजाफा किया या कोई ऐसा अमल किया जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से साबित नहीं वह रद किये जाने के लाइक है। आपने एक खुत्बा देते हुए इरशाद फरमाया दुन्या में बदतरीन चीज वह ईजाद इजाफे हैं जो लोग अपनी तरफ से कर लेते हैं। हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही दोजख में ले जाने वाली है। एक और रिवायत में है कि बिदअत से पूरी तरह बच के रहना। मदीने की खास हुरमत व अजमत के पेशे नजर फरमाने नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है कि जो शख्स मदीने में किसी बिदअत को जन्म दे या बिदअती को पनाह दे उसपर खुदा की ओर से फिरिश्तो और तमाम इन्सानों की लानत हो। नीज यह कि अल्लाह तआला उस की कोई नफ्ल या फर्ज इबादत क़बूल नहीं फरमाएंगे। जिस शख्स ने दीन में किसी बिदअत को ईजाद किया हो उसके मुतअल्लिक वईद है कि न सिर्फ वह अपने अमल का गुनाहगार होगा बल्कि जितने लोग उसके मुरतकिब होंगे उन सबकी सजा में कमी किये बग़ैर उन सबकी सजा भी उस शख्स के लिये होगी। एक बार हज़रत हसन (रज़ि0) को नसीहत फरमाई कि अगर तुम पुलक झपकने से भी कम वक्त में पुले सिरात से गुजर कर जन्नत में रसाई चाहते हो तो अल्लाह के दीन में अपनी तरफ से कोई

बिदअत दाखिल न करो। तहावी ने नक्ल किया है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि छः आदमियों पर मेरी भी लानत है अल्लाह की और उसके तमाम मकबूल अंबिया व रसूल की भी, फिर उनसे छः आदमियों में पहला नाम हुजूर ने जो फरमाया वह अल्लाह के दीन में इजाफा करने वाला, बाज रिवायात में है कि मेरी सुन्नत के बजाए बिदअत इख्तियार करने वाला। फिर जब कभी मुआशरे में बिदआत का जुहूर हो तो उलमा की जिम्मेदारी हो जाती है कि उसपर नकीर के लिये उठ खड़े हों। फरमाने नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताबिक अगर वह ऐसा न करें तो उनपर खुदा के फिरिश्तो की और तमाम इन्सानों की लानत होगी। यहाँ तक कि इरशाद हुआ कि बिदअती की तौकीर और उसका एहतिराम भी रवा नहीं और यह इस्लाम की जड़ खोदने में मदद देने की तरह है। और क्यों न हो कि बिदअत की ईजाद दरअस्ल सुन्नत की इमारत के गिराने और उससे इनहिराफ है। इस लिये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब कोई कौम बिदअत को ईजाद करती है तो उसी के बराबर सुन्नत उससे उठा ली जाती है।

❑❑

कुअनि की रौशनी में इंसानी हुकूक़

❖ अल्लाह का इरादा लोगों पर जुल्म करने का नहीं। (3–108)

❖ अल्लाह जालिमों से मुहब्बत नहीं करता। (3–140)

❖ जो व्यक्ति किसी को, बिना इसके कि वह किसी का कातिल हो या जमीन में फसाद मचाने वाला हो, कत्ल कर दे तो मानो उसने तमाम लोगों को कत्ल कर दिया; और जो व्यक्ति किसी एक की जान बचा ले, उसने मानो तमाम लोगों को जिन्दा कर दिया। (5–32)

❖ और अगर आपका रब चाहता तो सारी धरती के लोग सबके सब ईमान ले आते, तो क्या आप लोगों पर जबरदस्ती कर सकते हैं, यहाँ तक कि वह मोमिन ही हो जायें। (10–99)

❖ और अगर ऐसा नहीं करोगे तो अल्लाह से और उसके रसूल से लड़ने के लिये तैयार हो जाओ। अगर तौबः कर लो तो तुम्हारा असल माल तुम्हारा ही है, न तुम जुल्म करो न तुम पर जुल्म किया जाये। (2–279)

❖ और अहले किताब से बहस न करो मगर उम्दा तरीके से। (29–46)

❖ दीन के मामलें में कोई जोर जबरदस्ती नहीं है। (2–256)

❖ और ऐ नबी! अगर दुश्मन सुलह व सलामती की तरफ मायल हों तो तुम भी इसके लिये आमादा हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा करो। (8–61)

❖ और उसकी निशानियों में से है आसमानों और जमीन की पैदाइश, और तुम्हारी जबानों और रंगों का इख्तिलाफ यकीनन इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं, दानिशमन्द लोगों के लिये। (11–118–119)

❖ किसी को नाहक़ क़त्ल मत करो, गोया अल्लाह ने इन्सान के कत्ल को हराम करार दिया है। ( )

❖ ऐ ईमान वालों! कोई भी क़ौम किसी दूसरी कौम का मजाक न उड़ाये। (49–11)

❖ तुम्हारा दीन तुम्हारे साथ, मेरा दीन मेरे साथ। (109–6)

(रोजनामा राष्ट्रीय सहारा 27 अगस्त 2010 से साभार)

– प्रस्तुति : एम0 हसन अंसारी

❑❑

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

अयोध्या विवाद पर फैसला देने वाले जजों का अंतर्द्वंद्व 'सफल हुए या विफल, हम नहीं बता सकते'

लखनऊ! सुप्रीम कोर्ट ने अनेक बार कहा है कि जज अपनी राय सार्वजनिक मंचों पर नहीं रखते। वह जब भी बोलते हैं फैसलो के जरिये बोलते हैं। अयोध्या विवाद पर ऐतिहासिक फैसला देने वाले जजों ने भी अपनी राय और अंतर्द्वंद्व फैसले में ही व्यक्त किए हैं।

यह जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा है जिस पर चलने से फरिश्ते भी डरते हैं.....।' यह भूखंड बारूदी सुरंगों से अटा पडा है.....। रामजन्म भूमि–बाबरी मस्जिद विवाद को इन शब्दों में बयान कर जस्टिस सिबगतुल्लाह खान ने अपने फैसले की शुरुआत की है उन्होंने 1500 वर्ग फुट के इस भूखंड को 'बारूदी सुरंग क्षेत्र, बताते हुए अपन साथी जजों के साथ इसे साफ करने का जिम्मा अपने ऊपर लिया है।

खान कहते हैं, 'यह एक छोटा सा भूखंड है जो बारूदी सुरंगों से भरा पड़ा है, हमसे कहा गया है कि इसे साफ किया जाए।' उन्होंने खुलासा किया, 'कुछ समझदार लोगों ने हमें सलाह दी कि आप इसे साफ करने का प्रयास न करें। हम बारूदी सुरंगो से स्वयं को उड़वाने के लिए मूर्खों की तरह इस खतरनाक क्षेत्र में नहीं उतरेंगे। लेकिन हमें खतरा उठाना पड़ेगा। यह कहा जाता है कि जवीन का सबसे बड़ा खतरा वही है कि जब मौका आए और उस खतरे को उठाया न जाए।'

पीठ के अध्यक्ष जस्टिस खान ने फैसला 285 पन्नों में लिखा है। वह कहते हैं, 'जज यह तय नहीं कर सकते कि वे अपने प्रयासों में सफल हुए हैं या विफल। एक बार जब फरिश्ते इंसान के आगे सिर झुकाते हैं तो कभी–कभी इंसान को भी फरिश्तों से मिले इस सम्मान को न्यायोचित ठहराना चाहिए। यह वही मौका है। हम कामयाब हुए या नाकामयाब? हम नहीं बता सकते। क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपने केस में खुद जज नहीं हो सकता।' फैसले की यह प्रस्तावना इस लाइन के साथ समाप्त हुई है कि अब वह फैसला आता है जिसके लिए पूरा देश साँसें थामकर प्रतीक्षा कर रहा है। फैसले में उन्होंने मशहूर शायर इकबाल के शेर भी लिखे हैं।

पीठ के दूसरे जज जस्टिस सुधीर अगवाल ने सबसे लंबा फैसला लिखा है। उन्होंने फैसले की शुरुआत ऋग्वेद के श्लोकों का उल्लेख करते हुए की है। ये श्लोक ब्रह्माँड के सृजन और विनाश से संबंधित है। जस्टिस अग्रवाल ने कहा, 'विनाश के समय न तो अस्तित्व था और न ही अनस्तित्व। उस समय न तो लोक था न ही अंतरिक्ष से परे कुछ था।

उस समय सब कुछ किसमें समाया हुआ था? आश्रय कहाँ था और किसके लिए था?' 21 संस्करणों तथा 5000 पेजों के फैसले में जस्टिस अग्रवाल ने आगे कहा है 'कोई नहीं जानता है कि सृजन कब और कैसे हुआ? क्योंकि विद्वान और दृष्टा भी सृजन के बाद ही पैदा हुए हैं। अतः कोई भी इस सृजन का स्रोत नहीं जानता।' वह कहते हैं, उस समय न तो मृत्यु थी न ही अमरत्व। सूर्य और चंद्र के अभाव में प्रकाश तथा अंधकार का भी ज्ञान नहीं था। निर्वात की इस अवस्था में ब्रह्म' ही अपनी शक्ति से जीवित था। उससे आगे और विशिष्ट कोई नहीं था।

पीठ के तीसरे जज तथा अत्यधिक धार्मिक व्यक्ति जस्टिस धरम वीर शर्मा ने अपने फैसले में कोई प्रस्तावना नहीं दी है। उन्होंने अपनी बात सीधे मुद्दो से शुरू की है। फैसले में एक जगह उन्होंने भगवान राम की प्रसंशा जरूर की हैं लेकिन वह भी मुकदमे के एक बिन्दु पर फैसला देते समय। यह बिन्दु था कि क्या रामलला को कानूनी व्यक्ति माना जा सकता है और क्या लला होने के कारण राम नाबालिग नहीं हैं।

❑❑